सावित्री देवी (1925 – 2009)

सावित्री-शतकम्

[सविता देवता से सम्बन्धित सौ वेदमन्त्रों के गद्य और पद्य में अर्थ]

माता सावित्री देवी की स्मृति में प्रकाशित

व्याख्याकार :

वेदप्रकाश शास्त्री

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य

पद्यानुवादिका :

श्रीमती प्रतिभा

सेवानिवृत्त उप-प्रधानाचार्या

प्रकाशक :

नीता प्रकाशन

नई दिल्ली-110 049 (भारत)

© स़र्वाधिकार प्रकाशकाधीन सुरक्षित है।

प्रकाशक : **श्रीमती शान्तिदेवी गुप्ता**
नीता प्रकाशन
ए-4, रिंग रोड, साउथ एक्सटेंशन, भाग-1
नई दिल्ली-110 049 (भारत)
दूरभाष : 011-24636010, 22, 30

अणु-प्रेषण : neetabooks@vsnl.com
url: www.neetaprakashan.com

संस्करण : प्रथम, 2009

शब्द संयोजक : **भगवती लेजर प्रिंट्स,** नई दिल्ली-49

मुद्रक :

पुस्तक में दिये विचार लेखकों के अपने विचार हैं। प्रकाशक उनके लिए किसी भी प्रकार से उत्तरदायी नहीं है।

दो शब्द

यह सत्य है कि संसार में जिसका जन्म होता है, एक समय मृत्यु उसे निगल जाती है। गीता भी यही कहती है—

जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः ध्रुवम् जन्म मृतस्य च॥

ऐसी स्थिति में किसी की भी मृत्यु पर शोक करना व्यर्थ है, परन्तु जो व्यक्ति निरन्तर अन्धकार में डूबा हुआ है, यदि उसे प्रकाश की किरण दिखाई देती है तो वह आनन्द से ओत-प्रोत हो जाता है। इसके विपरीत जिस व्यक्ति को प्रकाश-ही-प्रकाश दिखाई दिया है और उसे सहसा अन्धकार ने घेर लिया है, उसकी स्थिति तो कविवर "शूद्रक" के शब्दों में—'**धृतः शरीरेण मृतः स जीवति**' हो जाती है, अर्थात् उसके लिये तो जीवन में आशा, उत्साह और प्रसन्नता सभी समाप्त हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में प्रकाश की किरण प्रभु से ही प्राप्त की जा सकती है।

माता श्रीमती सावित्री देवी के परलोकगमन के पश्चात् पारिवारिक जनों की जो क्षति हुई, वह ईश्वर से प्राप्त किरण के रूप में "सावित्री-शतक" नामक पुस्तिका द्वारा पर्याप्त शान्त हुई। यह पुस्तिका उन लोगों का भी मार्गदर्शन करेगी, जो घोर अन्धकार में निराश होकर अपने को मृतवत् समझते हैं। इस ग्रन्थ के द्वारा जहाँ वेद-प्रचार होगा, वहाँ वेद की ज्योति अज्ञान-अन्धकार को छिन्न-भिन्न कर देगी। मुझे आशा है कि यह पुस्तिका स्वाध्यायशील लोगों के लिये पथप्रदर्शक बनेगी।

मैं हूँ वेद पर पूर्ण विश्वास करनेवाली माता सावित्री जी की पुत्री—

प्रतिभा

(सेवानिवृत्त उप-प्रधानाचार्या)

17.03.2009

बी-जे/29, शालीमार बाग, दिल्ली

स्व० माता सावित्री देवी

(संक्षिप्त परिचय)

पूज्य माता सावित्री देवी जी का जन्म रावलपिण्डी (पश्चिमी पाकिस्तान) में 13 जून, 1925 को हुआ था। इनके पूज्य पिता लाला अमीरचन्द जी जम्मू-काश्मीर राज्य में तहसीलदार के पद पर कार्यरत थे। विभिन्न आर्य-विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने के बाद पूज्या माता जी ने काश्मीर के एक आर्य-विद्यालय में शिक्षिका का कार्य करने के साथ-साथ बी.ए. तक की शिक्षा प्राप्त की।

सन् 1946 में इनका पाणिग्रहण गुरुकुल पोठोहार के स्नातक श्री वेदप्रकाश शास्त्री से हुआ, जो उस समय अध्यापक थे। विवाह के पश्चात् श्री शास्त्री जी की नियुक्ति आर्य हाईस्कूल मौलाना (अम्बाला) और फिर विभाजन के समय दिल्ली में आने पर आप परिवार-सहित स्थायी रूप से दिल्ली में आ बसीं। यहाँ माता जी ने सतभ्रावाँ आर्य कन्या उच्चतर विद्यालय में सेवाकार्य आरम्भ किया। पूरी कुशलता से कार्य करते हुए पूज्य माता जी जून 1985 में सतभ्रावाँ स्कूल से शिक्षिका के पद से सेवानिवृत्त हो गईं।

माता जी के सौम्य स्वभाव, सात्त्विक व्यवहार व अतिथि-सत्कार से हर व्यक्ति भली-भाँति परिचित है। आप अतीव साहसी, कार्यकुशल, उत्साही, दूसरों को न केवल प्रेरणा देनेवाली थीं, अपितु दूसरों के सुख-दुःख के समय तन-मन-धन से अन्तरंग मित्रों व पारिवारिक सदस्यों की सब तरह सहायता करने को सदा

तत्पर रहती थीं। आपने अपना पूरा जीवन वैदिक धर्म की राह पर चलते हुए ही बिताया।

जहाँ एक ओर उनके पति श्री शास्त्री जी ने उनके विद्याध्ययन, अध्यापन व अन्य पारिवारिक गुत्थियों को कुशलतापूर्वक सुलझाने में सदा उनकी सहायता की, वहीं स्वर्गीया माता जी ने भी अपने पति की वैदिक–विषयों में रुचि को देखते हुए दिन–रात उनकी सेवा कर उनके लेखन–कार्य को और अधिक प्रखर बनाने में सहयोग दिया।

वृद्धावस्था के कारण माता जी लगभग पाँच–छह माह तक अल्पाहार पर ही रहीं। 29 जनवरी 2009 को वे परलोक सिधार गईं।

उनके सभी गुण उनके तीनों बेटियों तथा एक बेटे व उनके फले–फूले परिवारों में आज भी परिलक्षित हो रहे हैं। उनका जीवन आर्य–जगत् के लिए सदा अनुकरणीय रहेगा।

—विनय गुप्ता

एम. ए. बी. एड.

(माताजी की बड़ी पुत्री)

मन्त्रानुक्रमणिका

मन्त्र संख्या	मन्त्र	सन्दर्भ ग्रन्थ
२९	अदब्धेभिः सविता पायुभिः।	—ऋग् ६।७१।३
२०	अद्या नो देव सवितः।	—ऋग् २।८२।४
२२	अनागसो अदितये।	—ऋग् ५।८२।६
८५	अपाररुं पृथिव्यै।	—यजु० १।२६
३५	अपि ष्टुतः सविता देवः।	—ऋग् ७।३८।३
९०	अभि त्यं देवं सवितारम्	—अ० ७।१४।१
०२	अभि त्वा देव सवितः।	— ऋग् १।२४।३
४४	अभि त्यं देवं सवितारम्।	—यजु० ४।२५
०६	अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपम्।	—ऋग् १।३५।४
५७	अभ्रिरसि नार्यसि।	—यजु० ११।१०
१६	अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः।	—ऋग् २।३८।११
१८	अस्य हि स्वयशस्तरम्।	—ऋग् ५।८२।२
०४	आ कृष्णेन रजसा।	—ऋग् १।३५।२
७४	आ नऽडाभिर्विदथे सुशस्ति।	—यजु० ३३।३४
२३	आ विश्वदेवम् सत्पतिम्।	—ऋग् ५।८२।७
४७	इन्द्रस्य वज्रोऽसि।	—यजु० ९।५
६४	इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन।	—यजु० १९।८५
५६	इमं नो सवितर्यज्ञम्।	—यजु० ११।८
३४	उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्यस्य।	—ऋग् ७।३८।२
२७	उदु ष्य देवः सविता।	—ऋग् ६।७१।१

मन्त्र संख्या	मन्त्र	सन्दर्भ ग्रन्थ
३३	उदु ष्य देवः सविता।	—ऋग् ७।३८।१
३०	उदु ष्य देवः सविता दमूना।	—ऋग् ६।७१।४
११	उदु ष्य देवः सविता सवाय।	—ऋग् २।३८।१
३१	उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू।	—ऋग् ६।७१।५
४५	उपयामगृहीतोऽसि।	—यजु० ८।७
६२	उभाभ्यां देव सवितः।	—यजु० १९।४३
९१	ऊर्ध्वा यस्य मतिर्भा।	—अथर्व० १।१४।२
४३	एतं ते देव सवितः।	—यजु० २।१२
४२	गाव इव ग्रामं यूयुधिः।	—ऋग् १०।१४९।४
१७	तत्सवितुर्वृणीमहे।	—ऋग् ५।८२।१
९४	तां सवितः सत्यसवाम्।	—अथर्व० ७।१५।१
६१	तां सवितुर्वरेण्यस्य।	—यजु० १७।७४
६५	तेजोऽसि शुक्रममृतम्।	—यजु० २२।१
१२	त्वया हितमप्यमप्सु।	—ऋग् २।३८।७
९२	दमूना देवः सविता।	—अथर्व० ७।१४।४
६७	देवस्य चेततो महीम्।	—यजु० २२।११
७८	देवस्य त्वा प्रसुव आसवे।	—यजु० ३७।१
८१	देवस्य त्वा सवितुः।	—यजु० १।१०
७९	देवस्य त्वा सवितुः प्रसवे।	—यजु० ३८।१
२८	देवस्य वयं सवितुः।	—ऋग् ६।७१।२
४६	देव सवितः प्रसुव यज्ञम्।	—यजु० ९।१
५५	देव सवितः प्रसुव।	—यजु० ११।७
५९	देवस्त्वा सवितोद्वपतु।	—यजु० ११।६३

मन्त्र संख्या	मन्त्र	सन्दर्भ ग्रन्थ
४८	देवस्याहं सवितुः सवे।	—यजु० ९।१३
७०	देवस्य सवितुर्मतिमासवम्।	—यजु० २२।१४
९६	धाता रातिः।	—अथर्व० ७।१७।४
८३	धान्यमसि धिनुहि देवान्।	—यजु० १।२०
१४.	न यस्येन्द्रो वरुणो।	—ऋग्वेद २।३८।९
७१	न वा उ एतम्।	—यजु० २३।२६
४१	पश्चेदमन्यदभवद्यजत्रम्।	—ऋग् १०।१४९।३
८२	पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ।	—यजु० १।१२
८४	पृथिवि देवयजन्योषध्याः।	—यजु० १।२५
९९	प्र त्वा मुञ्चामि।	—अथर्व० ४१।१।५८
१००	प्र बुध्यस्व।	—अथर्व० ४१।२।३५
९५	बृहस्पते सवितर्वर्धयैनम्।	—अथर्व० ७।१६।१
१५	भगं धियं वाजयन्तः।	—ऋग् २।३८।१०
०१	भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्।	—यजु० ३६।३
३६	महो अग्नेः समिधानस्य।	—ऋग् १०।३६।१२
२५	य इमा विश्वा।	—ऋग् २।२।९
२४	य इमे उभे अहनी	—ऋग्० ५।८२।८
८८	यजूंषि यज्ञे समिधा।	—अथर्व० ५।२६।१
४०	यत्रा समुद्रः स्कभितो।	—ऋग् १०।१४९।२
९७	यन्न इन्द्रो अखनत्।	—अथर्व० ७।२४।१
७३	यदद्य सूर उदिते।	—यजु० ३३।२०
५४	यस्य प्रयाणमन्वन्य।	—यजु० ११।६

मन्त्र संख्या	मन्त्र	सन्दर्भ ग्रन्थ
०५	याति देवः प्रवता यात्युद्वतः।	—ऋग् १।३५।३
१३	याद्राध्यं वरुणो।	—ऋग् २।३८।८
५२	युञ्जते मन उत युञ्जते।	—यजु० ११।४
४९	युञ्जानः प्रथमम्।	—यजु० ११।१
५१	युक्त्वाय सविता देवम्।	—यजु० ११।३
५०	युक्तेन मनसा वयं देवस्य।	—यजु० ११।२
८९	युनक्तु देव सवितः।	—अथर्व० ५।२६।२
५३	युजे वां ब्रह्म पूर्व्यम्।	—यजु० ११।५
०९	ये ते पन्थाः सवितः।	—ऋग् १।३५।११
३७	ये सवितुः सत्यसवस्य।	—ऋग् १०।३६।१३
६९	रातिं सत्पतिम्।	—यजु० २२।१३
८०	वसोः पवित्रमसि।	—यजु० १।३
३२	वाममद्य सवितर्वाममु।	—ऋग् ६।७१।६
७६	वायुः पुनातु सविता पुनातु।	—यजु० ३३।३
७२	विभक्तारं हवामहे।	—यजु० ३०।४०
२१	विश्वानि देव सवितः।	—ऋग् ३।८२।५
६०	विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते।	—यजु० १२।३
९८	स एति सविता स्वः।	—अथर्व० १३।४।१
७७	सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थे।	—यजु० ३५।५
७५	सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्याम्।	—यजु० ३५।२
३८	सविता पश्चातात्सविता।	—ऋग् १०।३६।१४
८६	सविता प्रसवानामधिपतिः।	—अथर्व० ५।२४।१

मन्त्र संख्या	मन्त्र	सन्दर्भ ग्रन्थ
३९	सविता यन्त्रैः पृथिवीभरम्णात्।	—ऋग् १०।१४९।१
१०	सवितारमुषसमश्विना।	—ऋग् १।४४।८
८७	सवितः श्रेष्ठेनरूपेण।	—अथर्व० ५।२५।१२
९३	सावीर्हि देवः प्रथमाव।	—अथर्व० ७।१४।३
६३	सीसेन तन्त्रं मनसा।	—यजु० १९।८०
१९	स हि रत्नानि दाशुषे।	—ऋग् १।८२।३
६८	सुष्टुतिं सुमतीर्वृधः।	—यजु० २२।१२
५८	हस्तऽआधाय सविता।	—यजु० ११।११
६६	हिरण्यपाणिमूतये।	—यजु० २२।१०
०७	हिरण्यपाणिःसविता विचर्षणिः।	—ऋग् १।३५।९
०८	हिरण्यहस्तो असुरः।	—ऋग् १।३५।१०
२६	हुवे वो देवीमदितिम्।	—ऋग् ६।५०।१
०३	ह्वयामग्निं प्रथमाय स्वस्तये।	—ऋग् १।३५।१

—०—

(1)

बुद्धि का प्रेरक—सविता

ओ३म् भूर्भुवः स्वः।
तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

—यजुर्वेद ३६.३

अन्वयसहित सरलार्थ

(यो नः धियः प्रचोदयात्) जो हमारी बुद्धियों तथा कर्मों को सत्प्रेरणाएँ देता है, **(तत् सवितुः देवस्य वरेण्यं भर्गः धीमहि)** हम उसी सर्वप्रेरक, सर्वोत्पादक और सर्वैश्वर्य के दाता परमात्मा के सर्वश्रेष्ठ तेज का ध्यान करें, **(भूर्भुवः स्वः)** वही सबका उत्पादक, दुःखनिवारक तथा सुखस्वरूप है।

पद्यानुवाद

जो सद्बुद्धि, सत्कर्मों का प्रेरक और नियन्ता है।
उसी ईश के सर्वश्रेष्ठ तेजरूप का ध्यान करें।
वह ही जग-उत्पादक, दुःख-विनाशक सुख का दाता है।
सभी भाँति कल्याण का कर्त्ता, दुःखों से हमें छुड़ाता है॥

(2)

श्रेष्ठ ऐश्वर्य की कामना

अभि त्वा देव सवितरीशानं वार्याणाम्।
सदावन्भागमीमहे॥

—ऋग्वेद १.२४.३

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सदावन् देव सहितः**) हे शुभप्रदाता दिव्यगुणों के स्वामी, (**त्वा वार्याणामीशानं भागमीमहे**) हम आपसे उस भाग को चाहते हैं, जो वरणीय पदार्थों में सर्वश्रेष्ठ हो।

पद्यानुवाद

जो सद्बुद्धि सत्कर्मों का प्रेरक, अरु विश्वनियन्ता है।
ध्यान करें हम सदा उसी का, पापपुञ्ज का हन्ता है।
वही है जग का उत्पादक, वरणीय वस्तुओं का स्वामी।
उसी से हम हैं माँग रहे, सुखदाता वह है अन्तर्यामी॥

(3)

दिव्य शक्तियों से कल्याण

ह्वयाम्यग्निं प्रथमं स्वस्तये
ह्वयामि मित्रावरुणाविहावसे।
ह्वयामि रात्रीं जगतो निवेशनीं
ह्वयामि देवं सवितारमूतये॥

—ऋग्वेद १.३५.१

अन्वयसहित सरलार्थ

मैं (**ऊतये**) अपनी रक्षा तथा उन्नति आदि के लिए (**सवितारं ह्वयामि**) जगदुत्पादक परमेश्वर का चिन्तन करता हूँ। (**स्वस्तये प्रथमं अग्निं ह्वयामि**) अपने कल्याण के लिए सर्वोत्कृष्ट अग्रनायक परमात्मा का ध्यान करता हूँ। (**इह अवसे मित्रावरुणौ ह्वयामि**) इस संसार में दुष्टों से सुरक्षित रहने के लिए मित्ररूप तथा दण्डशक्ति से सम्पन्न श्रेष्ठ शासक को चाहता हूँ और (**जगतः निवेशनीं रात्रीं ह्वयामि**) संसार को आराम देनेवाली रात्रि की भी प्रशंसा करता हूँ।

पद्यानुवाद

अपनी उन्नति रक्षा के हित करूँ प्रार्थना ईश्वर से।
कल्याण हमारा आप कीजिए, श्रेष्ठ वस्तुएँ देकर के॥
अग्नि हो हितकारी जग में, शासक सदा सुरक्षक हो।
जग को जो विश्राम है देती, रजनी भी आरक्षक हो॥

(4)

सूर्यदेव की आकर्षणशक्ति वाले रथ से गति

आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो
निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो
याति भुवनानि पश्यन्॥

—ऋग्वेद १.३५.२

अन्वयसहित सरलार्थ

(देवः सविता हिरण्ययेन भुवनानि पश्यन्) प्रकाशमान सूर्य चमकीले किरणरूपी रथ से सब लोकों को दिखाता हुआ **(कृष्णेन रजसा वर्तमानः)** आकर्षक तेज से सम्पन्न होता हुआ **(मर्त्यम् अमृतं च निवेशयन्)** मरणधर्मा तथा अविनाशी पदार्थों पर अपना प्रभाव डालता हुआ **(आ याति)** प्रकट हो रहा है।

पद्यानुवाद

नित प्रकाशरथ पर सवार हो, सूर्यदेव प्रकट हैं होते।
अविनाशी अरु नश्वर वस्तुएँ, सबके सम्मुख प्रकट हैं करते।
सकल विश्व में ज्योति फैलाकर, दृष्टि प्रदान सभी को करते।
अन्धकार निशा का भी जो, निज ज्योति से उसको हरते॥

(5)

सूर्योदय से लाभों की प्राप्ति

याति देवः प्रवता यात्युद्वता याति
शुभ्राभ्यां यजतो हरिभ्याम्।
आ देवो याति सविता परावतोऽप
विश्वा दुरिता बाधमानः॥

—ऋग्वेद १.३५.३

अन्वयसहित सरलार्थ

(विश्वा दुरिता अपबाधमानः देवः सविता प्रवतः याति) सभी अन्धकारजन्य बुराइयों को नष्ट करता हुआ देव सूर्य नीचे से ऊपर की ओर जा रहा है। **(उद्वतः याति)** ऊपर से नीचे भी जाता है। **(यजतः शुभ्राभ्यां हरिभ्यां याति)** संसार का उपकार करने के हेतु श्वेत आकर्षक और प्रकाश के गुण रूप दो अश्वों से चल रहा है। भाव यह है कि सूर्य संसार के कल्याण के लिए उदय और अस्त होता है।

पद्यानुवाद

आकर्षक और प्रकाशक गुण जो, दो अश्वों के सदृश हैं जिसके।
ऊपर उठता-सा दीख रहा है, ज्योति ऊँची अपनी करके॥
चोर-डाकुओं को वही डराता, रोगाणु है दूर भगाता।
कभी न सोता जगता रहता, अपना यज्ञ वह नियमित करता॥
होता अस्त जभी यह सूरज, व्यापक होता अन्ध-तिमिर तब।
सुख से प्राणी सो जाते हैं, विश्राम सुखद ही पाते हैं सब॥

(6)

सूर्यरूप सविता का रथ

अभीवृतं कृशनैर्विश्वरूपं
हिरण्यशम्यं यजतो बृहन्तम्।
आस्थाद्रथं सविता चित्रभानुः
कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः॥

—ऋग्वेद १.३५.४

अन्वयसहित सरलार्थ

(**चित्रभानुः सविता**) अद्भुत ज्योतिवाला सूर्यदेव (**कृशनैः अभीवृतम्**) तीक्ष्ण करनेवाली किरणों से सब ओर से घिरा हुआ (**कृष्णा रजांसि तविषीं दधानः**) रात्रि के अन्धकार से काले हुए लोकों को अपने तेज से बल प्रदान करता हुआ (**विश्वरूपं हिरण्यशम्यं यजतः बृहन्तं रथं आस्थात्**) सब रूपों को दिखानेवाले, सोने के समान आनन्द देनेवाले और संसार का उपकार करने के हेतु अति विशाल रथरूपी प्रकाश पर विराजमान हो रहा है।

पद्यानुवाद

अन्धकार से ढके हुए लोकों को जो बल है प्रदान करता।
अपना तेज प्रकट वह करता, अन्धकार को सब ओर से हरता॥
अद्भुत किरणों का वह स्वामी, घिरा ही रहता किरणों से यह।
रथ उसका है सुख का दाता, रथ से हटता कभी नहीं वह॥
यज्ञरूप उसका रथ सुन्दर, सभी रूप दिखलाता है।
स्वर्ण-सदृश चमकीला वह है, सभी जनों को भाता है॥

(7)

सूर्य का द्युलोक और भूलोक पर प्रभाव

हिरण्यपाणिः सविता विचर्षणिरुभे
द्यावापृथिवी अन्तरीयते।
अपामीवां बाधते वेति सूर्यमभि
कृष्णेन रजसा द्यामृणोति॥

—ऋग्वेद १.३५.९

अन्वयसहित सरलार्थ

(हिरण्यपाणिः विचर्षणिः सविता द्यावापृथिवी उभे ईयते) सुवर्ण-सदृश किरण समूहरूपी हाथोंवाला और पदार्थों को छिन्न-भिन्न करनेवाला सूर्य द्युलोक तथा भूलोक दोनों के मध्य में प्रकट होता है। **(कृष्णेन रजसा)** पृथिवी आदि प्रकाशहीन लोकों के साथ **(अपामीवां बाधते)** रोगों को नष्ट करता है और **(सूर्यम् अभि ऋणोति)** किरण-समूह को सब ओर पहुँचाता है।

पद्यानुवाद

छेदन-भेदन करनेवाला स्वर्ण-सदृश किरणों से शोभित।
भूमि अरु द्युलोक मध्य रवि प्रकट सदा होता है नियमित॥
रोगों का नाशक है वह, ज्योति प्रदान उन्हें भी करता।
अन्धतमस से घिरे हुए जो, उन लोकों में बल है भरता॥

(8)

सूर्य की गति से दुःखद प्राणियों का नाश

हिरण्यहस्तो असुरः सुनीथः
सुमृळीकः स्ववाँ यात्वर्वाङ्।
अपसेधन्रक्षसो यातुधानानस्थाद्देवः
प्रतिदोषं गृणानः॥

—ऋग्वेद १.३५.१०

अन्वयसहित सरलार्थ

(हिरण्यहस्तः असुरः सुनीथः सुमृळीकः देवः अर्वाङ् यातु) किरणरूपी सुनहरी हाथोंवाला, प्राणशक्ति देनेवाला, उत्तम प्रकार से चलानेवाला और अति सुखदाता सूर्यदेव हमें सदा प्राप्त होता रहे, **(प्रतिदोषं गृणानः)** प्रत्येक रात्रि में स्तुति किया जानेवाला सूर्यदेव **(रक्षसः)** राक्षसों को और **(यातुधानान्)** पीड़ा देनेवाले रोगाणुओं और डाकुओं को **(अपसेधन् अस्थात्)** विनष्ट करता हुआ हमें प्राप्त होता रहे!

पद्यानुवाद

स्वर्णसदृश किरणोंवाला प्राणप्रदायक गति का दाता।
सूर्यदेव प्रकट है होकर, दुष्टों से बन जाता त्राता॥
सुखदायक भानु उदित हो, दुष्टों का करता संहार।
प्रति रात्रि वह स्तुतियाँ पाता, करके सब जग का उपकार॥

(9)

धूलरहित आकाश मार्ग से यात्रा की कामना

ये ते पन्थाः सवितः पूर्व्यासोऽ-
रेणवः सुकृता अन्तरिक्षे।
तेभिर्नो अद्य पथिभिः सुगेभी
रक्षा च नो अधि च ब्रूहि देव॥

—ऋग्वेद १.३५.११

अन्वयसहित सरलार्थ

हे **(सवितः)** शुभ प्रेरक परमात्मन्! **(ये ते पूर्व्यासः अरेणवः पन्थाः अन्तरिक्षे सुकृताः)** जो आपके मार्ग पूर्वजों से बनाये हुए धूलरहित आकाश में उत्तम रीति से तैयार किये गये हैं, **(तेभिः सुगेभिः पथिभिः नः अद्य रक्ष, देव च अधि ब्रूहि)** उन सुगम मार्गों से आप आज हमारी रक्षा कीजिए और हे देव! उन मार्गों के लिए हमें प्रेरित भी कर दीजिए।

पद्यानुवाद

जग-उत्पादक हे प्रभु प्यारे, उन मार्गों का परिचय दे दो।
पूर्वजनों ने जिन्हें बनाया, और वही जो धूलरहित हों॥
व्योममार्ग हम जानें जिनसे सदा सुरक्षित गति कर पाएँ।
मंगलमय ही सदा रहें जो, कष्ट न जिनमें कभी भी आएँ॥

(10)

सविता को यज्ञाग्नि द्वारा प्रसन्न करना

सवितारमुषसमश्विना
भगमग्निं व्युष्टिषु क्षपः।
कण्वासस्त्वा सुतसोमास
इन्धते हव्यवाहं स्वध्वर॥

—ऋग्वेद १.४४.८

अन्वयसहित सरलार्थ

(हे स्वध्वर) हे उत्तम अहिंसापूर्ण यज्ञ करनेवाले परमात्मन्, **(क्षपः व्युष्टिषु)** रात्रि की समाप्ति पर **(सुतसोमासः कण्वासः)** दिव्यगुणों से सम्पन्न ज्ञानी लोग और **(रूपवाससः)** सुन्दर रूपों की कामना करनेवाले लोग तथा **(अश्विनौ)** पति-पत्नी **(सवितारम् उषसं भगम् हव्यवाहं त्वाम् इन्धते)** सबके प्रेरक, ऐश्वर्यदाता, प्रकाश देनेवाले तथा ऐश्वर्य प्रदाता हव्य-पदार्थों को देनेवाले तुम्हें मन में प्रदीप्त करते हैं।

पद्यानुवाद

हे पति-पत्नी, शुभ यज्ञ के कर्ता, यज्ञ हेतु तत्पर हो जाओ।
रात्रिकाल समाप्त हुआ है, यज्ञ से देवों को हर्षाओ॥
हों प्रसन्न सविता अरु अग्नि उषाकाल मुदित हो जाए।
वातावरण हो जाए उत्तम, अन्न की कमी न रहने पाए॥

(11)

रत्नों का दाता—सविता, परमात्मा

उदु ष्य देवः सविता सवाय
शश्वत्तमं तदपा वह्निरस्थात्।
नूनं देवेभ्यो वि हि धाति
रत्नमथाभजद्वीतिहोत्रं स्वस्तौ॥

—ऋग्वेद २.३८.१

अन्वयसहित सरलार्थ

(वह्निः स्यः देवः सविता शश्वत्तमं तदपा सवाय अस्थात्) सब उत्तरदायित्वों को निभानेवाला वह देव सविता सदा से होनेवाले अपने कर्म को जगत् के कल्याण के लिए निभा रहा है। **(देवेभ्यः नूनं रत्नं हि वि धाति)** वह अवश्य ही जड़ देवों तथा विद्वानों को रमणीय पदार्थों से पुष्ट करता है और **(स्वस्तौ वीतिहोत्रं अभजत्)** सबके कल्याण के लिए प्राप्त किये गये यज्ञ को स्वीकार करता है।

पद्यानुवाद

हे सविता, तुम धारण करते, भूमि अरु आकाश सभी को।
मेघों को करके कम्पित, जल ले जाते जहाँ न जल हो॥
विद्वानों को तुम ही हो देते, रमणीय पदार्थ सदा परमेश्वर।
कल्याण के हेतु सब जीवों के, आपका चलता रहता अध्वर॥

(12)

सवितारूप परमात्मा के कार्य और प्रशासन

त्वया हितमप्यमप्सु भागं
धन्वान्वा मृगयसो वि तस्थुः।
वनानि विभ्यो नकिरस्य
तानि व्रता देवस्य सवितुर्मिनन्ति॥

—ऋग्वेद २.३८.७

अन्वयसहित सरलार्थ

हे जगद्-रचयिता सवितादेव! (**अप्सु**) अन्तरिक्ष में (**त्वया हितमप्यं भागम्**) तुम्हारे द्वारा स्थापित किया गया जल का भाग (**मृगयसः धन्व अनु आ वि तस्थुः**) जंगली प्राणी मरुस्थलों में भी प्राप्त कर लेते हैं। (**विभ्यः वनानि वितस्थुः**) तुम्हारे द्वारा ही पक्षियों के लिए जंगल स्थित हैं। (**अस्य सवितुः देवस्य तानि व्रता नकिः मिनन्ति**) इस जगदुत्पादक देव के उन नियमों का उल्लंघन कोई भी नहीं कर सकता।

पद्यानुवाद

हे जगपालक सवितादेव, आपने रखा है जल को नभ में।
मरुस्थलों में भी वह जल, प्यास मिटाता प्राणिगण में॥
आपने ही पक्षिगण के हित, उत्पन्न किये हैं घने-घने वन।
आपकी शक्ति की तुलना तो, कर नहीं सकता है कोई भी जन॥

(13)

सवितारूप परमात्मा—संसार का उत्पादक

याद्राध्यं[1] वरुणो योनिमप्य-
मनिंशितं निमिषि जर्भुराणः।
विश्वो मार्ताण्डो व्रजमा पशुर्गात्स्थशो
जन्मानि सविता व्याकः॥

—ऋग्वेद २.३८.८

अन्वयसहित सरलार्थ

(निमिषि) रात्रिकाल में आँखें बन्द कर लेने पर **(वरुणः अप्यम् अनिशितं योनिं यात्)** वरणीय सूर्य कर्मशील जागे हुए संसार में जा पहुँचता है। **(विश्वा मार्ताण्डः पशुः वज्रं गात्)** सूर्य से सम्बन्ध रखनेवाले सभी प्राणी गतिशील हो जाते हैं और **(सविता जन्मानि स्थशः वि अकः)** सूर्य अपने प्रकाश से सब प्राणियों को पृथक्-पृथक् प्रकट कर देता है।

पद्यानुवाद

आँख बन्द कर सोते जब हम, रात्रिकाल में थके हुए जन।
सूर्य जागकर उसी समय में, पहुँच हैं जाते अन्य सदन॥
वहाँ सूर्य ज्योति को लखकर, कर्मशील हो जाते सारे।
सभी वस्तुएँ स्पष्ट हो जातीं, दिखते सब हैं न्यारे-न्यारे॥

(14)

जिसके विषय का उल्लंघन कोई नहीं कर सकता, वही सविता (परमात्मा) स्तुत्य है

न यस्येन्द्रो वरुणो न मित्रो
व्रतमर्यमा न मिनन्ति रुद्रः।
नारातयस्तमिदं स्वस्ति हुवे
देवं सवितारं नमोभिः॥

—ऋग्वेद २.३८.९

अन्वयसहित सरलार्थ

(यस्य व्रतं न इन्द्रः, वरुणः, न मित्रः, न अर्यमा, न रुद्रः आमिनन्ति) जिसके व्रतरूप अनुशासन का न तो सूर्य, न चन्द्रमा, न मेघ, न वायु तथा न प्राण ही उल्लंघन करते हैं तथा **(न अरातयः)** न अदानी लोग ही नष्ट करते हैं, **(तं देवं सवितारं नमोभिः स्वस्ति हुवे)** उस सकल जगत् के उत्पादक परमात्मा को नमस्कार कर में उसी से कल्याण की कामना करता हूँ।

पद्यानुवाद

उस सविता की स्तुति हम करते नमस्कार कर श्रद्धा से।
जिसने सारी सृष्टि रची है, जीवनदान दिया है जिसने॥
सूर्य, चन्द्र, वायु या बादल जिसके व्रत को टाल न सकते।
करते रहते कार्य निरन्तर, कभी नहीं वे हैं थकते॥

(15)

देव सविता के प्रेम की कामना

भगं धियं वाजयन्तः पुरन्धिं
नराशंसो ग्नास्पतिर्नो अव्याः।
आये वामस्य सङ्गथे रयीणां
प्रिया देवस्य सवितुः स्याम॥

—ऋग्वेद २.३८.१०

अन्वयसहित सरलार्थ

(ग्नास्पतिः नः नराशंसः वाजयन्तः भगं पुरन्धिं धियं अव्याः) भूमि और वाणी का स्वामी श्रेष्ठ लोगों की प्रशंसा करनेवाले और अन्न तथा ज्ञान के इच्छुक हम लोगों को ऐश्वर्य तथा अनेक विषयों को धारण करनेवाली बुद्धि से सम्पन्न कर दे! हम लोग **(वामस्य आये)** प्रशंसनीय धन की प्राप्ति हेतु **(रयीणां सङ्गथे)** ऐश्वर्यों के समूह की प्राप्ति-हेतु **(सवितुः देवस्य प्रियाः स्याम)** ऐश्वर्यदाता सर्वोत्पादक परमात्मा के प्रिय बन जाएँ!

पद्यानुवाद

वह सविता शुभ बुद्धि हमें दे, जो है वाणी का स्वामी।
भूमि जिसके शासन में है, जो है प्रभुवर अन्तर्यामी॥
उसकी कृपा से मिले प्रशंसा, ज्ञान अन्नादिक भी मिल जाए।
विविध ऐश्वर्य के स्वामी हों हम, सविता-देव के प्रिय कहलाएँ॥

(16)

सवितारूप परमात्मा के उपकार

अस्मभ्यं तद्दिवो अद्भ्यः पृथिव्या-
स्त्वया दत्तं काम्यं राध आ गात्।
शं यत्स्तोतृभ्य आपये
भवात्युरुशंसाय सवितर्जरित्रे॥

—ऋग्वेद २.३८.११

अन्वयसहित सरलार्थ

(सवितः) हे जगदुत्पादक, शुभप्रेरक और ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! **(त्वया अस्मभ्यं दिवः अद्भ्यः तत् काम्यं राधःदत्तम् यत् आ गात्)** आपने ही हमें द्युलोक के जलों से वह कमनीय ऐश्वर्य दिया है, जिसे अन्नादि के रूप में हम प्राप्त कर रहे हैं। **(यत् स्तोतृभ्यः शम्)** जो आपके स्तोताओं के लिए कल्याणकारी है, **(उरुशंसाय जरित्रे यत् शं भवाति तत् आपये)** और जो बहुत प्रशंसनीय उपासक के लिए कल्याणरूप हो, वह सब हमें प्राप्त करा दीजिए।

पद्यानुवाद

जग के पालक, जग के स्रष्टा, कमनीय वस्तुएँ हमें दीजिए।
भूमि, जल, नभ में जो कुछ है, देकर हमको मुदित कीजिए॥
आपके स्तोता सदा जो करते स्तुतियाँ आपकी पावन मन से।
इच्छा उनकी पूर्ण कीजिए, शुभकर्म जो करते रहते तन से॥

(17)

सर्वश्रेष्ठ भोग्य पदार्थों का दाता—सविता

तत्स॑वि॒तुर्वृ॑णीमहे व॒यं दे॒वस्य॒ भोज॑नम्।
श्रेष्ठं॑ सर्व॒धात॑मं॒ तुरं॒ भग॑स्य धीमहि॥

—ऋग्वेद ५.८२.१

अन्वयसहित सरलार्थ

(वयं सवितुः देवस्य तत् श्रेष्ठं भोजनं वृणीमहे) हम जगदुत्पादक, रक्षक और सब ऐश्वर्यों के स्वामी परमात्मा के उस श्रेष्ठ भोग्य-सामग्री की कामना करते हैं, जो **(भगस्य सर्वधातमं तुरं धीमहि)** ऐश्वर्यशाली परमात्मा की सबको धारण करनेवाली और पालनेवाली है तथा मोक्ष के द्वारा यह रोग, शोक, भय तथा शत्रुओं का संहार करती है। हमें ऐसे ही ऐश्वर्य को धारण करना चाहिए।

पद्यानुवाद

कामना करते हैं उस प्रभु से, सब जग का जो उत्पादक है।
ऐश्वर्यों का स्वामी ईश्वर, पाप-ताप का नाशक है॥
सबको धारण कर पालन करता, शत्रु का संहारक है।
वह ऐश्वर्य हमें प्रभु दे दो, जो सभी गुणों का धारक है॥

(18)

सविता का शासन—अनुल्लंघनीय

अस्य हि स्वयशस्तरं सवितुः कच्चन प्रियम्।
न मिनन्ति स्वराज्यम्॥

—ऋग्वेद ५.८२.२

अन्वयसहित सरलार्थ

(अस्य सवितुः) इस सविता का **(स्वयशस्तरं कच्चन प्रियम्)** अपने यश को बढ़ानेवाले और पूर्णतः प्रिय यशवाले **(स्वराज्यम् न मिनन्ति)** अपने शासन-सामर्थ्य को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, अर्थात् परमात्मा की शक्ति अजेय है।

पद्यानुवाद

प्रभु अजेय शक्ति का स्वामी, उसका अजेय ही यश है।
जितना ऊँचा किसी का यश है, उसके यश से वह नीरस है॥
सविता दीप्त सदा निज यश से, नहीं कोई भी उसके सम है।
उस सविता की करें वन्दना, पूजन करते उसी का हम हैं॥

(19)

रमणीय पदार्थों का दाता सविता (परमात्मा)

स हि रत्नानि दाशुषे सुवाति सविता भगः।
तं भागं चित्रमीमहे॥

—ऋग्वेद ५.८२.३

अन्वयसहित सरलार्थ

(सः भगः सविता दाशुषे हि रत्नानि सुवाति) वह ऐश्वर्यसम्पन्न परमात्मा दानी व्यक्ति को ही रमणीय पदार्थों से सम्पन्न करता है। **(तं चित्रं भागं ईमहे)** हम उसके इसी विचित्र ऐश्वर्य अंश की कामना करते हैं, ताकि वह हमें ऐसा ऐश्वर्य प्रदान कर ऐश्वर्यशाली बना दे।

पद्यानुवाद

सब ऐश्वर्यों का स्वामी केवल, परम विभु जगत्राता है।
देता सब रमणीय पदार्थ ही, उसी को वह जो दाता है॥
उसका ऐश्वर्य परम अलौकिक, उसी की कामना करते हम।
करे प्रदान ऐश्वर्य हमें वह, जिससे परम सुख पायें हम॥

(20)

सौभाग्यदाता और दुःस्वप्न का हर्ता—सविता (परमात्मा)

अ॒द्या नो॑ देव सवितः प्र॒जाव॑त्सावी॒ः सौभ॑गम्।
परा॑ दु॒ःष्वप्न्यं॑ सुव॥

—ऋग्वेद ५.८२.४

अन्वयसहित सरलार्थ

(हे देव सवितः) हे दिव्यगुणों के भण्डार, सर्वोत्पादक प्रभो! **(अद्या नो प्रजावत् सौभगं सावीः)** आप हमें शीघ्र ही सन्तानों से सम्पन्न सौभाग्य बढ़ानेवाला ऐश्वर्य प्रदान कीजिए और **(दुःस्वप्न्यं परा सुव)** हमें दुष्ट स्वप्नों से बचाइये, ताकि हम भद्र ही भद्र का अनुभव कर सकें।

पद्यानुवाद

सर्वोत्पादक प्रभुवर प्यारे, दिव्य गुणों के हो भण्डार।
सौभाग्य बढ़ाओ शुभ संतति से, ऐश्वर्यों के हो तुम आगार॥
दुःस्वप्नों से हमें बचाइये, सविता सुख के हो आधार।
करें भद्र ही अनुभव हम सब, भद्रभाव सब हों साकार॥

(21)

दुर्गुणों, दुर्व्यसनों तथा शोकादि का हर्ता— सविता (परमात्मा)

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद्भद्रं तन्न आ सुव॥

—ऋग्० ५।८२।५

अन्वयसहित सरलार्थ

(देव सवितः) हे दानशील और शुभ प्रेरक प्रभो **(विश्वानि दुरितानि परासुव)** कृपया, सभी दुर्गुण, दुर्व्यसन, दुर्भाव और शोक, ताप आदि बुराइयों को हमसे दूर कर दीजिए तथा **(यद् भद्रं तन्नः आसुव)** जो कुछ भी हमारे लिए कल्याणकारी हो, वही पदार्थ हमें प्राप्त कराइए, ताकि हम सुखी और आनन्दित रह सकें।

पद्यानुवाद

जगत् के स्रष्टा हे परमात्मन्, दुर्गुण दुख सब दूर करो।
रोग-शोक से हमें बचाकर, भद्रभाव से हृदय भरो॥
कुटिल चाल से दूर रहें हम, जीवन सरल सुखदायी हो।
गुणगण ऐसे ही हम पायें, हों भद्रभाव-उपजायी जो॥

(22)

निष्पापियों के लिए उत्तम पदार्थों का दाता—सविता (परमात्मा)

अनागसो अदितये देवस्य सवितुः सवे।
विश्वा वामानि धीमहि॥

—ऋग्० ५।८२।६

अन्वयसहित सरलार्थ

(**देवस्य सवितुः सवे**) दिव्य गुणों के स्वामी जगदुत्पादक परमात्मा द्वारा इस संसार में (**अनागसः अदितये विश्वा वामानि धीमहि**) निष्पाप होकर हम मोक्ष-प्राप्ति के लिए सम्पूर्ण कमनीय पदार्थों को धारण करें।

पद्यानुवाद

सविता से उत्पन्न हुआ जो, विश्व यह सुन्दर सुखमय हो।
पापरहित हो जीवन सारा, कल्याण करे सब भाँति जो॥
सुख की प्राप्ति के हम हेतु, उत्तम ही धन को पायें।
कुटिल चाल से दूर रहें हम, सत्त्व भावना अपनायें॥

(23)

स्तुतियोग्य—सविता (परमात्मा)

आ विश्वदेवं सत्पतिं सूक्तैरद्या वृणीमहे।
सत्यसवं सवितारम्॥

—ऋग्० ५।८२।७

अन्वयसहित सरलार्थ

(**अद्या सूक्तैः**) आज ही हम सुन्दर स्तुतियों द्वारा (**विश्वदेवं सत्पतिं सत्यसवं सवितारं वृणीमहे**) सभी दिव्यशक्तियों के भण्डार, सत्य प्रतिज्ञा करने वाले, श्रेष्ठ स्वामी, जगदुत्पादक, पालक और ऐश्वर्यशाली परमात्मा का वरण करें, अर्थात् उसकी उपासना ध्यानपूर्वक करें।

पद्यानुवाद

वरण करें प्रभु पालक का हम, ऐश्वर्य का दाता सविता जो।
करें स्तुति हम श्रद्धा से ही, मन जिससे आनन्दित हो॥
है वरणीय वही जगदीश्वर, सत्यपूर्ण ही कर्म हैं जिसके।
करें उपासना प्रतिदिन उसकी, सच्चे भक्त कहावें उसके॥

(24)

दिन-रात कार्यशील-सविता (परमात्मा)

य इमे उभे अहनी पुर एत्यप्रयुच्छन्।
स्वाधीर्देवः सविता॥

—ऋग्० ५।८२।८

अन्वयसहित सरलार्थ

(यः स्वाधीः देवः सविता) जो उत्तम कर्म करने वाला दिव्यगुणों का स्वामी जगदुत्पादक परमात्मा **(उभे अहनी अप्रयुच्छन् पुरः एति)** दोनों दिन और रात में भी निरालस होकर सब कार्य करता है, उसी की उपासना हम किया करें।

पद्यानुवाद

उत्तम कर्म सदा जो करता, सविता-देव गुणों का स्वामी।
दिन में भी वह रजनी में भी, रक्षा करता अन्तर्यामी॥
नहीं प्रमाद कभी वह करता, नियमित काम सभी हैं उसके।
न्यायमार्ग से विचलित न होते, नियम श्रेष्ठ हैं निश्चित जिसके॥

(25)

सब ज्ञान का दाता और सर्वोत्पादक—सविता (परमात्मा)

य इमा विश्वा जातान्याश्रावयति श्लोकेन।
प्र च सुवाति सविता॥

—ऋग्० ५।८२।९

अन्वयसहित सरलार्थ

(यः सविता इमा जातानि श्लोकेन आश्रावयति) जो जगत्स्रष्टा उत्पन्न हुए पदार्थों द्वारा हमें अपना महत्त्व बता रहा है **(च प्रसुवाति)** और नये पदार्थ उत्पन्न कर रहा है, उसी सवितादेव की हमें उपासना करनी चाहिए।

पद्यानुवाद

अपने कर्मों से ही जो प्रभु अपने गुण बतलाता है।
उत्पन्न किए संसार में सविता कौशल निज दिखलाता है॥
वही नई से नई वस्तुएँ जग में रचता रहता है।
अपने कर्मों से ही प्रतिदिन अपनी महिमा कहता है॥

(26)

सविता-अदिति विभिन्न देवों से रक्षा की कामना

हुवे वों देवीमदितिं नमोभिर्मृळीकाय वरुणं मित्रमग्निम्।
अभिक्षदामर्यमणं सुशेवं त्रातृन्देवान्त्सवितारं भगं च॥

—ऋग्० ६।५०।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(वः अदितिं देवीं वरुणं, मित्रम्, अग्निम्, अभिक्षदाम् अर्यमणं, सुशेवं सवितारं, त्रातृन् देवान् भगं च हुवे) हे मनुष्यो, मैं जीवन देनेवाली दिव्यगुणों से सम्पन्न मातृभूमि, वरणीय चन्द्रमा, जल से तृप्त करने वाले सूर्य, आगे बढ़ाने वाली अग्नि, शत्रुओं की कामनाओं को पूर्ण न करने वाले शासक, कल्याणकारी जगदुत्पादक परमात्मा, राष्ट्र की रक्षा करने वाले विजेता सैनिकों तथा ऐश्वर्य की कामना करता हूँ।

पद्यानुवाद

मातृभूमि जो देती अन्न है, जिस पर करते हम हैं वास।
सूर्य, चन्द्रमा, जो जीवन देते, जल देते और प्रकाश॥
शासक जो है रक्षण करता, शत्रुजनों से सदा हमारा।
जग-उत्पादक, सब वस्तु-प्रदाता देता जो है सदा सहारा।
उस सविता की, सैनिक जन की, ऐश्वर्यों की करूँ कामना।
प्रभु-कृपा से पूर्ण सिद्ध हो श्रेष्ठ मेरी यही भावना॥

(27)

सविताऱूप सूर्यदेव जल का दाता

उदु ष्य देवः सविता हिरण्यया
बाहू अयंस्त सवनाय सुक्रतुः।
घृतेन पाणी अभि प्रुष्णुते मखो
युवा सुदक्षो रजसो विधर्मणि॥

—ऋग्० ६।७१।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सवनाय सुक्रतुः स्यः देवः सविता**) सबको प्रेरणा देने के लिए शुभ कर्म करने वाला वह प्रकाशमय सूर्यदेव (**उ हिरण्यया बाहू उद् अयंस्त**) दृढ़तापूर्वक चमकीली भुजाओं-रूप किरणों को प्रकट कर रहा है। (**मखः युवा सुदक्षः**) यज्ञशील, सदा जवान रहने वाला और अति बलवान् सूर्य (**रजसः विधर्मणि**) लोकों के लिए विविध कार्यों हेतु (**पाणी घृतेन अभि प्रुष्णुते**) हाथरूपी किरणों को जल द्वारा परिपूर्ण कर लेता है।

पद्यानुवाद

सबको प्रेरित करने वाला रश्मि-भुजाएँ ऊँची करके।
सूर्य उदय होता है देखो, स्वर्णमयी शोभा को धरके॥
यज्ञशील यह युवा सदा ही, जल-बल से रहता सम्पन्न।
किरणों द्वारा जल है देता, जलद-पटल को करके छिन्न॥

(28)

सवितारूप परमात्मा के शुभ प्रशासन में रहने की कामना

देवस्य वयं सवितुः सवीमनि
श्रेष्ठे स्याम वसुनश्च दावने।
यो विश्वस्य द्विपदो यश्चतुष्पदो
निवेशने प्रसवे चासि भूमनः॥

—ऋग्० ६।७१।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(यः विश्वस्य द्विपदः यश्चतुष्पदः निवेशने प्रसवे भूमनः चासि) हे प्रभो, जो आप सम्पूर्ण द्विपद मनुष्यादि और चतुष्पद गौ आदि प्राणियों के निवास के लिए इस संसार में सुव्यवस्था करते हैं, ऐसे **(सवितुः देवस्य श्रेष्ठे सवीमनि)** जगदुत्पादक और शुभ प्रेरक आप सविता देव के श्रेष्ठ प्रशासन में **(च वसुनः दावने)** और धन के दानकार्य में **(वयं स्याम)** हम सदा सहयोग देते रहें।

पद्यानुवाद

सवितृ-देव के श्रेष्ठ नियम का पालन नित्य करें जीवन में।
द्विपद चतुष्पद जीव हैं जिससे पाते बल नित तन में अरु मन में॥
उसी देव की आज्ञा में रह, करें सभी शुभ कर्म सदा।
उसकी आज्ञा में जो रहते उनसे दूर ही रहती विपदा॥

(29)

परमात्मा से सुरक्षा और दुष्टों के प्रशासन से बचने की कामना

अदब्धेभिः सवितः पायुभिष्ट्वं
शिवेभिरद्य परि पाहि नो गयम्।
हिरण्यजिह्वः सुविताय नव्यसे
रक्षा माकिर्नो अघशंस ईशत॥

—ऋग्० ६।७१।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(**देव त्वम् अद्य**) हे दिव्यगुणों वाले सविता देव, आज आप (**अदब्धेभिः शिवेभिः पायुभिः नः गयम् परि पाहि**) न परास्त होने वाले और कल्याणकारी रक्षा-साधनों से हमारे घरों और सन्तानों की सब ओर से रक्षा कीजिए। (**हिरण्यजिह्वः**) आप आकर्षक जीभरूप पवित्र वेदवाणी के स्वामी हैं। (**नव्यसे सुविताय**) नये ऐश्वर्य देने के लिए (**नः रक्षा**) हमें सुरक्षित कीजिए और आपकी कृपा से (**अघशंसः नः माकिः ईशत**) पापीजन हम पर कदापि शासन न करें!

पद्यानुवाद

हे सविता, तुम करो हमारी रक्षा उत्तम अस्त्रों से।
नहीं पराजित होते जो हैं किसी प्रकार के शस्त्रों से॥
मङ्गलमय उन अस्त्रों से तुम आवास हमारे रक्षित कर दो।
ऐश्वर्यों से परिपूर्ण आप हैं, सम्पद् से उनको भर दो॥
ऐसी रक्षा करो कि सविता, पापीजन न कर पायें।
पराधीन कभी भी हमको, हम स्वतन्त्रता अपनायें॥

(30)

दानी के लिए उत्तम पदार्थों का दाता परमात्मा

उदु ष्य देवः सविता दमूना
हिरण्यपाणिः प्रतिदोषमस्थात्।
अयोहनुर्यजतो मन्द्रजिह्व आ
दाशुषे सुवति भूरि वामम्॥

—ऋग्० ६।७१।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(दमूना हिरण्यपाणिः स्यः देवः सविता प्रतिदोषम् उ उदस्थात्) सम्पूर्ण विश्व का नियामक और आकर्षक व्यवहार वाला वह दिव्यगुणों का स्वामी जगदुत्पादक परमात्मा प्रत्येक रात्रि में भी जागता रहता है। **(अयोहनुः)** लोह-सदृश दृढ़ नियमों को चलाने वाला **(मन्द्रजिह्वः दाशुषे भूरि वामं सुवति)** यज्ञशील, आनन्दप्रद वेदवाणी वाला वह परमात्मा दानी व्यक्ति को बहुत उत्तम धन से सम्पन्न कर देता है।

पद्यानुवाद

अरिगण का दमन जो करता, जग का पालक वह सविता।
कार्य उत्तम हैं सब उसके, देता वह ही सब वस्तु सदा॥
रात्रिकाल में भी है जगता, रक्षा करता सब जग की।
दृढ़ नियमों का है वह स्वामी, वाणी उसकी आनन्दमयी॥
दानी-जन को वह है देता, अद्भुत सम्पद् का भण्डार।
वह ही देता दाना-पानी, भाँति भाँति का आहार॥

(31)

सूर्योदय का सौन्दर्य

उदू अयाँ उपवक्तेव बाहू
हिरण्यया सविता सुप्रतीका।
दिवो रोहांस्यरुहत्पृथिव्या
अरीरमत्पतयत्कच्चिदभ्वम्॥

—ऋग्० ६।७१।५

अन्वयसहित सरलार्थ

(सविता) सूर्यदेव **(हिरण्यया सुप्रतीका बाहू उपवक्ता इव उ उद् अयाम्)** अपनी सुवर्ण-सदृश चमकती हुई दर्शनीय बाहुरूप किरणों को इस प्रकार उठाता है, जैसे कोई वक्ता भाषण देते समय बाँहें उठा लेता है। और **(पृथिव्या अरीरमत्)** पृथिवी के प्रदेशों को सुन्दर बना देता तथा **(कच्चिद् अभ्वम् पतयत्)** वह चोरी आदि की दुर्घटनाओं को रोक देता है।

पद्यानुवाद

सूर्यदेव की रश्मि-भुजाएँ उठती जब हैं नभ के अन्दर।
लगता भाषण-कर्ता-सा वह वक्ता बनता अति सुन्दर॥
ऊँचे से ऊँचे भी नभ के भागों तक वह जाता है।
पृथिवी को सुन्दर कर देता, चोरी आदि मिटाता है॥

(32)

परमात्मा से प्रतिदिन उत्तम ऐश्वर्य की कामना

वा॒मम॒द्य स॑वितर्वा॒मम॑ु श्वो
दि॒वेदि॑वे वा॒मम॒स्मभ्यं॑ सावीः।
वा॒मस्य॒ हि क्षय॑स्य देव॒
भूरे॑र॒या धि॒या वा॑म॒भाज॑ः स्याम॥

—ऋग्० ६।७१।६

अन्वयसहित सरलार्थ

हे (**सवितः**) जगदुत्पादक प्रभो, (**अस्मभ्यम् अद्य वामम् श्वः वामम् दिवेदिवे वामम् सावीः**) आप हमें आज, कल और प्रतिदिन उत्तम धन से सम्पन्न कर दीजिए। हे (**देव**) दाता परमात्मन् (**अया धिया**) आपकी इस भक्ति से हम (**वामस्य क्षयस्य**) सुन्दर घर के और (**भूरेः वामभाजः स्याम**) बहुत उत्तम धन के स्वामी बन जाएँ!

पद्यानुवाद

वरणीय वस्तुएँ देने वाले हे सविता, हे जग-पालक।
आज भी हमें दो कल भी हमें दो वस्तुगण जो हो सुखदायक।
प्रतिदिन श्रेष्ठ वस्तुएँ पाएँ, आपकी कृपा बनी रहे।
उत्तम घर भी आप से पाएँ, सम्पत्स्वामी सदा रहें॥

(33)

परमात्मा के दान कर्म

उदु ष्य देवः सविता ययाम
हिरण्ययीममतिं यामशिश्रेत्।
नूनं भगो हव्यो मानुषेभिर्वि
यो रत्ना पुरूवसुर्दधाति॥

—ऋग्० ७।३८।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(स्यः देवः सविता यां हिरण्ययीं अमतिम् उ उदशिश्रेत्) वह धनी, विश्व का उत्पादक सविता देव, जिस सुवर्णादि से भरपूर अनन्त धनराशि का स्वामी है, **(यः पुरूवसुः रत्नानि विदधाति, सः भगः मनुष्येभिः नूनम् हव्यः)** और जो असीम ऐश्वर्यवाला रमणीय पदार्थ हम सबको देता है, वह ऐश्वर्यशाली परमात्मा अवश्य ही स्तुति-योग्य है। हमें उसकी स्तुति अवश्य करनी चाहिए।

पद्यानुवाद

जग का स्वामी देव वह सविता जिस असीम धन का है स्वामी।
स्वर्णमयी उस सम्पद् को दे हमको भी वह अन्तर्यामी॥
बहुत धनों-रत्नों का दाता जो ऐश्वर्यों का है भण्डार।
स्तुतियोग्य वही है केवल पूजें उसको सब परिवार॥

(34)

सवितारूप शासक के प्रजा के प्रति कर्त्तव्य

उदु तिष्ठ सवितः श्रुध्य१स्य
हिरण्यपाणे प्रभृतावृतस्य।
व्यु१र्वीं पृथ्वीममतिं सृजान
आ नृभ्यो मर्तभोजनं सुवानः॥

—ऋग्० ७।३८।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(हिरण्यपाणे सवितः उ उत्तिष्ठ) हे चमकती किरणों वाले सूर्य-सदृश आकर्षक व्यवहार वाले शासक, निश्चय करके उठ खड़े हो जाओ। **(अस्य ऋतस्य प्रभृतौ श्रुधि)** इस सत्य के मार्ग पर चलते हुए सत्य को ध्यान से समझो। हे **(मर्त)** वीर मानव, **(नृभ्यः भोजनं सुवानः)** अपनी प्रजाओं के लिए भोजन का उत्तम प्रबन्ध करते हुए तुम **(उर्वीं पृथ्वीम् अयतिम् आ सृजान)** विस्तृत राष्ट्रभूमि को असीम ऐश्वर्य से सम्पन्न कर दो।

पद्यानुवाद

स्वर्ण के धारक, प्रजा के प्रेरक हे शासक अब उठ जाओ।
सूर्य-सदृश बनकर तेजस्वी ज्ञान राष्ट्र में फैलाओ॥
वीर बन कर प्रजा के हेतु, अन्न की वृद्धि खूब करो।
राष्ट्र को धन, बल, यश से अरु श्रेष्ठ नीति से सदा भरो॥

(35)

परमात्मा का नियन्त्रण और रक्षा-कार्य

अपि ष्टुतः सविता देवो अस्तु
यमा चिद्विश्वे वसवो गृणन्ति।
स नः स्तोमान्नमस्य१श्चनो
धाद्विश्वेभिः पातु पायुभिर्नि सूरीन्॥

—ऋग्० ७।३८।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(यम् विश्वे चिद् वसवः आगृणन्ति) जिसकी प्रशंसा सभी वसु सब ओर से करते हैं, **(देवः सविता अस्माभिः अपि ष्टुतः स्यात्)** उस देव सविता की स्तुति हम भी करें। **(सः नमस्यः नः स्तोमान् चनः धात्)** वह नमस्करणीय हमें ऐश्वर्यों तथा अन्नों से सम्पन्न कर दे तथा **(विश्वेभिः पायुभिः सूरीन् निपातु)** समस्त रक्षा-साधनों से विद्वानों को सुरक्षित कर दे।

पद्यानुवाद

सभी वसु जिसकी स्तुति हैं करते, पूर्ण स्तुति हो उसकी हमसे।
नमस्करणीय वही है केवल, अन्नों से सब राष्ट्र को भर दे॥
जग का रक्षक वह सविता है, हमें सुरक्षित करे सदा।
अपने रक्षक-उपकरणों से वह, दूर हटा दे सब विपदा॥

(36)

हम सविता के उत्कृष्ट शासन का पालन करें

म॒हो अ॒ग्नेः स॑मिधा॒नस्य॒ शर्म॒ण्य-
नागा मि॒त्रे वरु॑णे स्व॒स्तये॑।
श्रेष्ठे॑ स्याम सवि॒तुः सवी॑मनि॒
तद्दे॒वाना॒मवो॑ अ॒द्या वृ॑णीमहे॥

—ऋग्० १०।३६।१२

अन्वयसहित सरलार्थ

(**अद्या देवानां तद् अवः वृणीमहि**) आज हम दिव्यशक्तियों के उस रक्षण तथा वृद्धिकारक सामर्थ्य का वरण कर रहे हैं, जिससे हम (**सवितुः श्रेष्ठे सवीमनि स्याम**) सवितादेव के सर्वोत्कृष्ट शासन में रहें तथा (**समिधानस्य महः अग्नेः शर्मणि स्याम**) देदीप्यमान आदरणीय अग्नि द्वारा सुख प्राप्त करें और (**स्वस्तये**) आत्म-कल्याण के लिए (**अनागाः**) पापरहित होकर (**मित्रे वरुणे स्याम**) सबसे प्रेम करनेवाले वरणीय सवितादेव के आश्रय का आनन्द लें।

पद्यानुवाद

पूजनीय है यज्ञ की अग्नि, उससे सारे सुख हम पायें।
सूर्य-चन्द्र सम पापरहित रह मङ्गलकारी पथ अपनायें॥
सविता का जो श्रेष्ठ प्रशासन, सुख से उसमें सदा रहें।
आज्ञा उसकी प्रतिदिन पालें, श्रेष्ठकर्म ही किया करें॥

(37)

दिव्य शक्तियों द्वारा उत्तम वस्तुओं का दाता—सविता (परमात्मा)

ये स॑वि॒तुः स॒त्यस॑वस्य॒ विश्वे॑
मि॒त्रस्य॑ व्र॒ते वरु॑णस्य दे॒वाः ।
ते सौभ॑गं वी॒रव॒द्गोम॒दप्नो॒
दधा॑तन॒ द्रवि॑णं चि॒त्रम॒स्मे ॥

—ऋग्० १०।३६।१३

अन्वयसहित सरलार्थ

(ये मित्रस्य वरुणस्य सत्यसवस्य सवितुः व्रते विश्वे देवाः) जो सबसे प्रेम करनेवाले, वरणीय और सत्य प्रतिज्ञा वाले सविता के कार्यों में लगे हुए सभी विद्वान् तथा दिव्यशक्तियाँ हैं, **(ते अस्मे वीरवद्, गोमद्, अप्नः चित्रं द्रविणं दधातन)** वे सब हमें वीर सन्तानों से और गाय आदि पशुओं से सम्पन्न कर्म तथा अद्‌भुत धन प्रदान करें।

पद्यानुवाद

व्रत का पालन जो करते हैं, देव सभी उस सविता का।
जो वरणीय मित्र है सबका, सत्य नियम ही रहता जिसका॥
हम सबको सम्पन्न करें वे, गौओं से अरु अश्वों से।
धनी बना दें हम लोगों को सब प्रकार का धन देकर के॥

(38)

सब ओर से प्रेरक आयुवर्धक—सविता

सविता पश्चातात्सविता पुरस्तात्
सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात्।
सविता नः सुवतु सर्वतातिं
सविता नो रासतां दीर्घमायुः॥

—ऋग्० १०।३६।१४

अन्वयसहित सरलार्थ

(सविता पश्चात्, पुरस्तात्, उत्तरात् अधरात्तात् नः सर्वतातिं सुवतु) जगदुत्पादक, श्रेष्ठ प्रेरक और सब ऐश्वर्यों का स्वामी परमात्मा हमें पीछे, सामने, ऊपर तथा नीचे सभी ओर से सब प्रकार के ऐश्वर्य से सम्पन्न कर दे और **(सविता नः दीर्घम् आयुः रासताम्)** वही सविता हमारी आयु भी बढ़ा दे।

पद्यानुवाद

आगे पीछे ऊपर नीचे सभी ओर से सविता हमको।
सब प्रकार का धन दे डाले, जो जीवन में सुखकारी हो॥
आयु दीर्घ भी देवे हमको, सुख से चले यह जीवन सारा।
रोग-शोक न कभी सतावें, पापों का हो दूर किनारा॥

(39)

अब लोकों का नियंत्रक—सविता (परमात्मा)

सविता यन्त्रैः पृथिवीमरम्णाद-
स्कम्भने सविता द्यामदृंहत्।
अश्वमिवाधुक्षद्धुनिमन्तरिक्षम-
तूर्ते बद्धं सविता समुद्रम्॥

—ऋग्० १०।१४९।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(सविता यन्त्रैः पृथिवीम् अरम्णात्) सृष्टि के कर्ता सवितादेव ने अपनी नियन्त्रण शक्तियों से पृथिवी को यथास्थान सुस्थिर किया, **(अस्कम्भने सविता द्याम् अदृंहत्)** बिना किसी सहारे के उस सविता ने द्युलोक को भी यथास्थान स्थापित किया। **(धुनिम् अश्वमिव अन्तरिक्षम् अधुक्षत्)** शरीर कम्पाने वाले घोड़े के समान मेघादि को अन्तरिक्ष में चलाया और **(सविता अतूर्ते समुद्रम् बद्धम्)** और सबको प्रेरणा देने वाले सविता ने आधाररहित आकाश में सागर को स्थापित कर दिया, अर्थात् जल का भण्डार भर दिया।

पद्यानुवाद

सवितादेव की यन्त्रण-शक्ति पृथिवी को स्थिर करती है।
बिना सहारे सूर्यादिक को यथास्थान पर रखती है।
वही शक्ति मेघों को भी नभ में अश्वों सम दौड़ाती।
वही व्योम में जल का सागर सभी ओर है ले जाती॥

(40)

द्युलोक और भूमि का विस्तारक—सविता (परमात्मा)

यत्रा समुद्रः स्कभितो व्यौनदपां
नपात्सविता तस्य वेद।
अतो भूरत आ उत्थितं रजोऽतो
द्यावापृथिवी अप्रथेताम्॥

—ऋग्० १०।१४९।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(यत्रा समुद्रः स्कभितः व्यौनत्) जहाँ आकाशीय सागर वश में रहकर पृथिवी को जल से तृप्त करता है, **(अपांनपात् सविता तस्य वेद)** जलों को सुरक्षित रखने वाला परमात्मा उन स्थानों को भी जानता है। **(अतः भूः अतः उत्थितं रजः)** उसी से भूमि और अन्तरिक्ष प्रकट हुए और **(अतः द्यावापृथिवी अप्रथेताम्)** उसी से द्युलोक और भूलोक का विस्तार हुआ।

पद्यानुवाद

नभ का सागर जहाँ कहीं भी भूमि को सिंचित है करता।
शुष्क प्रदेशों को यह सागर जहाँ-कहीं भी जल से भरता॥
सविता उन कार्यों का ज्ञाता, उससे छिपा नहीं कुछ काम।
भूमि-नभ सिंचित वह करता, सभी ज्ञात हैं उसको धाम॥

(41)

परमात्मा का बोध उसके कार्यों से

यश्चेदमन्यदभवद्यजत्रम-

मर्त्यस्य भुवनस्य भूना।

सुपर्णो अङ्ग सवितुर्गरुत्मान्पूर्वो

जातः स उ अस्यानु धर्म॥

—ऋग्० १०।१४९।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(अमर्त्यस्य भुवनस्य यः भूमा, इदं यजत्रमभवत्) अविनाशी परमात्मा की जो रचना है, वही उसकी यज्ञक्रिया का बोध करा रही है और **(सवितुः सुपर्णः गरुत्मान् अस्य पूर्वः जातः धर्म अनु)** उस सृष्टि-रचयिता का जो सुन्दर पंखरूपी कार्यों वाला महिमापूर्ण सृष्टि-रचना का कार्य है, वह तो पहले से ही प्रसिद्ध उसका स्वाभाविक धर्म है। भाव यह है कि परमात्मा सृष्टि तो रचता ही है, परन्तु उस द्वारा दिए गए पदार्थ उसकी याज्ञिक क्रियाओं (दानशीलता) का बोध कराते हैं।

पद्यानुवाद

अविनाशी सविता की रचना उसका बोध कराती है।
सृष्टि का स्त्रष्टा है कोई, तथ्य यही बतलाती है॥
सृष्टि की रचना-रूप जो पक्षी, उसे जानते सब हैं हम।
उसके तुल्य न कोई जग में, सब हैं उस से कम ही कम॥

(42)

विश्व-वरणीय द्युलोक का धारक—सविता (परमात्मा)

गावइव ग्रामं यूयुधिरिवा-
श्वान्वाश्रेव वत्सं सुमना दुहाना।
पतिरिव जायामभि नो न्येतु
धर्ता दिवः सविता विश्ववारः॥

—ऋग्० १०।१४९।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(**दिवः धर्ता विश्ववारः सविता**) मोक्ष के आनन्द को धारण करने वाला सभी से वरणीय प्रेरक परमात्मा (**नः न्येतु**) हमें मोक्ष की ओर इस प्रकार ले जाए, जैसे (**गावः ग्रामम् इवा**) गौएँ सायंकाल के समय गाँव की ओर जाती हैं, (**युयुधिः अश्वान् इव**) योद्धागण घोड़ों को लेते हैं (**वत्सः सुमना दुहाना वाश्रा इव**) बछड़ा प्यार करने वाली और दूध दिलाने वाली गाय की ओर तथा (**पतिः जायाम् अभि इव**) पति अपनी पत्नी की ओर प्रेम से जाता है।

पद्यानुवाद

मोक्षानन्द का जो है धारक, मोक्ष के पथ पर ले जाए।
उसी भाँति ज्यों गौएँ चरकर, अपने ग्राम में नित आएँ॥
जैसे योद्धा अश्वों की ही सदा कामना करते हैं।
जैसे पति प्रिय पत्नी की चाह हृदय में धरते हैं॥

जैसे दूधभरी गौएँ निज वत्सों से स्नेह दिखाती हैं।
वैसा ही स्नेह आपका जनता नित्य आपसे चाहती है।

(43)

रक्षा की कामना

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे।
तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥

—यजु० २।१२

अन्वयसहित सरलार्थ

हे (**देव सवितः**) संसार के उत्पादक ऐश्वर्यशाली प्रभो, (**ते एतं यज्ञं बृहस्पतये ब्रह्मणे प्राहुः**) आपका यज्ञ वेदों के ज्ञानी तथा वेदों के पूर्ण विद्वान् के लिए निरन्तर चल रहा है, ऐसा कहते हैं। (**तेन यज्ञम् अव तेन यज्ञपतिं तेन माम् अव**) उसी यज्ञ से आप हमारे यज्ञ की, हमारे यज्ञपति की और हमारी रक्षा कीजिए।

पद्यानुवाद

यज्ञपति, उत्पादक जग के, हे सविता तुम प्रभु हमारे।
यज्ञ आपके उनके हित हैं वेदों के जो ज्ञाता न्यारे॥
ज्ञान प्रदान सदा हो करते, प्रेरक तुम उनके हो प्यारे।
यज्ञ, यज्ञपति और हमारे रक्षक, दूर करो सब कष्ट हमारे॥

(44)

परमात्मा की अनुकूलता

अभि त्यं देवꣳसवितारमोण्योः
कविक्रतुमर्चामि सत्यसवꣳरत्नधाममभि
प्रियं मतिं कविम्।
ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भाऽअदिद्युतत्सवीमनि
हिरण्यपाणिरमिमीत सुक्रतुः कृपा स्वः।
प्रजाभ्यस्त्वा प्रजास्त्वाऽनु-
प्राणन्तु प्रजास्त्वमनुप्राणीहि॥

—यजु० ४।२५

अन्वयसहित सरलार्थ

(**ओण्योः कविक्रतुम्**) भूमि और आकाश की रचना करने वाले, (**सत्यसवं**) सत्य के प्रेरक, (**रत्नधामनि प्रियम्**) रमणीय पदार्थों में सबसे प्रिय (**मतिं कविम्**) बुद्धि प्रदाता तथा वेदज्ञान के कवि (**त्यं देवं सवितारम्**) उस दिव्यगुणों के भण्डार, सर्वप्रेरक और जगदुत्पादक की (**अर्चामि**) मैं पूजा करता हूँ, (**यस्य अमतिः मा ऊर्ध्वा**) जिसकी असीम प्रभा ऊपर तक विस्तृत है और (**सवीमनि अदिद्युतत्**) इस रचे हुए संसार में भी प्रकाशित हो रही है। (**सुक्रतुः कृपा प्रजाभ्यः स्वः**) उस शुभकर्मवाले ने अपनी प्रजा के लिए स्वयं रचना की है। (**त्वा प्रजाः अनुप्राणन्तु**) हे प्रभो, प्रजाएँ आपके अनुकूल ही चलें और (**त्वं प्रजा अनुप्राणीहि**) आप प्रजाओं के अनुकूल ही सब कार्य करें!

पद्यानुवाद

पूजन करते जिस प्रभु का है हम, कवि वही है बुद्धि-प्रदाता।
अति रमणीय पदार्थ वह देता, वह है कवि मति का भी दाता॥
जिसकी प्रभा है सबसे ऊपर सृष्टि में होती प्रतिभासित।
प्रजा के हित ही कार्य वह करता, प्रजा उसी से होती रक्षित॥

(45)

अन्नदाता परमात्मा

उपयामगृहीतोऽसि सावित्रोऽसि
चनोधाश्चनोधाऽअसि चनो मयि धेहि।
जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं
भगाय देवाय त्वा सवित्रे॥

—यजु० ८।७

अन्वयसहित सरलार्थ

हे मानव, (**उपयामगृहीतोऽसि**) नियमपूर्वक तुम गृहस्थ में आये हो। (**चनोधाश्चनोधाऽसि**) अन्न के धारक हो और अन्न को धारण करते रहना। (**चनो मयि धेहि**) प्रभो, मुझे अन्न से सम्पन्न कर दीजिए। (**जिन्व यज्ञं जिन्व यज्ञपतिं**) मेरे दानादि शुभकर्मों को पुष्ट कीजिए और यज्ञ को पुष्ट करने वाले को भी पुष्ट कीजिए। (**देवाय सवित्रे भगाय त्वा**) दिव्यगुणों वाले जगदुत्पादक आप परमात्मा की उपासना मैं ऐश्वर्यों की प्राप्ति के लिए कर रहा हूँ।

पद्यानुवाद

करो उपासना उस स्रष्टा की, ऐश्वर्यों की जो वृष्टि करता।
पुष्ट करें हम यज्ञ-कर्म को, याज्ञिक के जो दुःख है हरता।
नियम गृहस्थ के पालन करना, हे मानव, अन्न के धारक बनकर।
अन्न को प्रतिपल रक्षित करना, शुभकर्मों में रहना जीवनभर॥

(46)

पवित्र ज्ञान और अन्न की कामना

**देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु
वाचस्पतिर्वाजं नः स्वदतु स्वाहा ॥**

—यजु० ९।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय) हे दिव्यगुणों के स्वामी, ऐश्वर्य के अधिपति परमेश्वर, ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए यजमान को प्रेरित कीजिए। **(दिव्यः गन्धर्वः केतपूः नः केतं पुनातु)** आप दिव्यगुणों वाले, भूमि आदि के धारणकर्ता और ज्ञान को पवित्र करने वाले हैं। हमारे ज्ञान को पवित्र कीजिए। **(वाचस्पतिः वाजं नः स्वदतु)** आप वाणी के स्वामी हैं, हमारे ज्ञान, अन्न और बल को सुखदायक बनाइए।

पद्यानुवाद

दिव्य गुणों के स्वामी प्रभुवर, यज्ञपति को प्रेरित कीजो।
वाणी के स्वामी तुम सविता, ज्ञान, अन्न, बल पावन दीजो॥

दिव्य गुणों के धारणकर्ता, भूमि को तुम धारण करते।
पवित्र ज्ञान के हो तुम दाता, अज्ञान हमारा सारा हरते॥

(47)

सबकी जननी—भूमि माता

इन्द्रस्य वज्रोऽसि वाजसास्त्वयाऽयं वाजꣳसेत्।
वाजस्य नु प्रसवे मातरं
महीमदितिं नाम वचसा करामहे।
यस्यामिदं विश्वं भुवनमाविवेश
तस्यां नो देवः सविता धर्म सावीषत्॥

—यजु० ९।५

अन्वयसहित सरलार्थ

(**इन्द्रस्य वज्रोऽसि**) हे श्रेष्ठ मानव, तू पाप के नाश के लिए परमशक्तिशाली प्रभु की वज्रशक्ति के तुल्य है। (**वाजसाः असि**) तू ऐसे संघर्ष का अनुभवी है। (**त्वया अयं वाजं सेत्**) तेरे सहयोग से यह राष्ट्र पापनिवारण में सफल हो जाए! (**वाजस्य नु प्रसवे मातरं महीं नाम वचसा करामहे**) तू अन्न की उत्पत्ति के लिए अपनी वाक्-शक्ति से मातृरूप भूमि को पुष्ट कर। (**इदं भुवनं यस्याम् आविवेश**) यह सकल संसार जिसमें आश्रय पाता है (**तस्यां देवः सविता नः धर्म साविषत्**) उस भूमि में दिव्य प्रेरक प्रभु हमें अपने कर्त्तव्य का बोध कराए।

पद्यानुवाद

सविता प्रेरक से विनय हमारी, हमें बोध निज कर्त्तव्य का दे दे।
प्रभु की वज्रशिला सम बनकर हम, संघर्षरत हो पाप मिटा दें॥
करें कठोर संघर्ष का अनुभव, हम सकल विश्व को स्वर्ग बना दें।
वाक्शक्ति से अन्न सृजन कर, क्षुधा-तृषा को पूर्ण मिटा दें॥

(48)

अन्नादि की कामना

देवस्याहꣳसवितुः सवे सत्यप्रसवसो
बृहस्पतेर्वाजजितो वाजं जेषम्।
वाजिनो वाजजितोऽध्वन स्कभ्नुवन्तो
योजना मिमानाः काष्ठां गच्छत॥

—यजु० ९।१३

अन्वयसहित सरलार्थ

(अहं सत्यप्रसवसः वाजजितः बृहस्पतेः सवितुः देवस्य सवे वाजं जेषम्) सत्य के प्रेरक, अन्न, ज्ञान और बल के देनेवाले सबसे महान् सवितादेव द्वारा उत्पन्न किये संसार में मैं भी अन्न, ज्ञान और बल का स्वामी बन जाऊँ! **(वाजिनो वाजजितः स्कभ्नुवन्तः अध्वनः योजनाः मिमानाः काष्ठां गच्छत)** हे मनुष्यो, अन्नादि के स्वामी उस बलशाली प्रभु का आश्रय प्राप्त कर नई योजनाएँ बनाते हुए तुम लोग उसी मार्ग से सब दिशाओं में फैल जाओ।

पद्यानुवाद

हे मानव, इस सृष्टि के अन्दर जिसको सविता ने है बनाया।
अन्न, ज्ञान, बल देकर हमको सभी भाँति है खूब बढ़ाया॥
हमारा भी कर्त्तव्य यही है, हम भी करें दानकर्म सब सुन्दर।
अन्न, ज्ञान, बल देवें सबको, जिससे विश्व बने यह सुखकर॥

(49)

योग की विधि

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियः।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्याभरत्॥

—यजु० ११।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(तत्त्वाय) आध्यात्मिकता को प्राप्त करने के लिए **(मनसा धियः प्रथमं युञ्जानः सविता)** मन से अपनी बुद्धि और कर्मों को सर्वप्रथम सबका प्रेरक परमात्मा हमें अपने साथ जोड़ता हुआ **(अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य)** अपनी अग्निस्वरूप ज्योति को धारण करवाकर **(पृथिव्या अधि आभरत्)** सम्पूर्ण पृथिवी को ज्ञानज्योति से भर देता है।

पद्यानुवाद

दिव्य ज्योति सविता की धारें, सकल सृष्टि में ज्ञान फैला दें।
मन बुद्धि अरु कर्म सभी हम, प्रभु से प्रेरित हो के सँवारे॥

अग्नि-स्वरूप प्रभु तुम प्यारे, अपनी ज्योति हम में चमका दो।
ज्ञान देकर करो सुज्ञानी, अज्ञान-अन्ध को पूर्ण मिटा दो॥

(50)

सुखद शक्ति के लिए परमात्मा की संगति

युक्तेन मनसा वयं देवस्य सवितुः सवे।
स्वर्ग्याय शक्त्या॥

—यजु० ११।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(सवितुः देवस्य सवे) सर्वोत्पादक दिव्यगुणों वाले परमात्मा से उत्पन्न संसार में **(वयं स्वर्ग्याय शक्त्या युक्तेन मनसा भवेम)** हम लोग सुखदायक शक्ति के द्वारा योग में लगे मन में स्थिर हो जायें।

पद्यानुवाद

करें उपासना उसी देव की सृष्टि का जो है कर्ता-धर्ता।
सकल सुखों का जो है दाता, कष्टों का है जो संहर्ता॥
ध्यान करें हम उस सविता का, स्वर्ग-सुखों का है जो दाता।
पाप-भावना दूर भगा दे, शुभकर्मी का है वह त्राता॥

(51)

परमात्मा से प्रेरणा प्राप्त करने वाले

युक्त्वाय सविता देवान्त्स्वर्यतो धिया दिवम्।
बृहज्ज्योतिः करिष्यतः सविता प्रसुवाति तान्॥

—यजु० ११।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(सविता स्वः यतः देवान् धिया दिवं युक्त्वाय) सर्वोत्पादक परमेश्वर सुख तथा प्रकाश को नियमित करने वाले देवों को अपनी बुद्धि से उन्हें तेजस्वी बनाकर वही **(सविता बृहज्ज्योतिः करिष्यतः)** विशाल ज्योति को करता हुआ **(तान् प्रसुवाति)** उन देवों को योगी में तेज पहुँचाने के लिए प्रेरित करता है।

पद्यानुवाद

तेजोमय है सविता ईश्वर, सुखप्रकाश को नियमित करता,
सब देवों को कर तेजस्वी, अज्ञान-तिमिर सब ओर से हरता।
उसी देव में स्थिर कर बुद्धि, हम भी तेजस्वी बन जायें,
तेज प्राप्त कर उसी देव से, मुक्तिधाम का सब सुख पाएँ॥

(52)

वाणी का दाता परमात्मा

युञ्जते मनऽउत युञ्जते धियो
विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः।
वि होत्रा दधे वयुनाविदेकऽ-
इन्मही देवस्य सवितुः परिष्टुतिः ॥

—यजु० ११।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(बृहतः विपश्चितः विप्रस्य होत्रा विप्राः मनः युञ्जते) उस महान् ज्ञानी और बुद्धिमान् परमात्मा की वाणियों में ज्ञानी योगी लोग मन को लगा देते हैं। **(उत मनः युञ्जते)** और मन को भी उसी में केन्द्रित कर देते हैं। **(एक इत् वयुनावित् विदधे)** वह एक परमेश्वर ही सर्वज्ञ है और सृष्टि की रचना करता है। **(सवितुः देवस्य परिष्टुतिः मही)** उस सर्वोत्पादक देव की सभी प्रकार की स्तुति महत्त्वपूर्ण है।

पद्यानुवाद

सकल जगत् का है जो स्रष्टा, स्तुति करें उस सविता की,
योगीजन जिसको हैं ध्याते, जिसके वश में सृष्टि सभी।
वेद की वाणी उसी ने दी है, सभी वाणियों की जो मूल,
भवबन्धन जो काट है सकती, हरती सभी दुखों के शूल॥

(53)

परमात्मा की संगति की विधि

युजे वां ब्रह्म पूर्व्यं नमोभिर्वि
श्लोकऽएतु पथ्येव सूरेः।
शृण्वन्तु विश्वेऽअमृतस्य पुत्राऽआ
ये धामानि दिव्यानि तस्थुः ॥

—यजु० ११।५

अन्वयसहित सरलार्थ

(नमोभिः वां पूर्व्यं ब्रह्म युजे) सत्कर्मों द्वारा योगी तथा योगेच्छु दोनों के लिए मैं प्राचीन लोगों से अनुभव किए गए उत्पादक परमात्मा को अपने में स्थिर करता हूँ। **(सूरेः श्लोकः पथि एव वि एतु)** विद्वान् मनुष्य द्वारा बताया गया वह मार्ग तुम्हारे योगमार्ग का पथप्रदर्शन करे! **(ये दिव्यानि धामानि आतस्थुः)** जो लोग प्रकाश से पूर्ण उत्तम स्थानों को प्राप्त कर चुके हैं, **(ते विश्वे अमृतस्य पुत्राः)** वे सभी अविनाशी परमात्मा को पुत्र-सदृश प्रिय हैं।

पद्यानुवाद

व्यापक प्रभु का करते अनुभव, योगिजन हैं वैसे ही।
पूर्वजनों ने किया था अनुभव, अपने मन से जैसे ही॥
उस से जो मिल जाते हैं, पुत्र वही बन जाते उसके।
आनन्द परम पा लेते वे हैं, मुक्त हो करके ही उस से॥

(54)

परमात्मा की सर्वोत्कृष्ट महिमा

यस्य॑ प्र॒याण॒मन्व॒न्यऽ इद्य॒युर्दे॒वा
दे॒वस्य॑ महि॒मान॒मोज॑सा।
यः पार्थि॑वानि विम॒मे सऽए॑त॒शो
रजा॑ᳬंसि दे॒वः स॑वि॒ता म॑हित्व॒ना ॥

—यजु० ११।६

अन्वयसहित सरलार्थ

(यस्य देवस्य प्रयाणम् महिमानम् ओजसा अनु अन्ये इत् ययुः) जिस सुखदायक ईश्वर की सुखदात्री महिमा को पराक्रम द्वारा एक के बाद दूसरे प्राप्त करते हैं, **(यः देवः सविता महित्वना)** जो दिव्य गुणों वाला सर्वप्रेरक परमात्मा अपनी महिमा से सम्पन्न है, **(स एतशः रजांसि विममे)** वही सर्वत्र पहुँचा हुआ परमात्मा सब लोकों का माप-तोलकर निर्माण करता है।

पद्यानुवाद

स्रष्टा अनुपम सविता है वह, लोकों का निर्माण जो करता।
तुला निराली से वह तोले, सन्तुलन अद्भुत से इनको धरता॥
सुखकर महिमा उस प्रभु की है, ओज, तेज का है जो दाता।
निज महिमा से युक्त वह सविता, वही है कर्ता, वही विधाता॥

(55)

ज्ञान का प्रेरक और वाणी में माधुर्य का दाता—परमात्मा

**देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय।
दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतन्नः पुनातु
वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु॥**

—यजु० ११।७

अन्वयसहित सरलार्थ

(**देव सवितः यज्ञं प्रसुव**) हे सुखदायक, सबके प्रेरक प्रभो, यज्ञ की प्रेरणा दीजिए। (**यज्ञपतिं भगाय प्रसुव**) यजमान को ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए प्रेरित कीजिए। (**दिव्यः गन्धर्वः केतपूः वाचस्पतिः नः केतं पुनातु, नः वाचं स्वदतु**) दिव्य गुणों वाला वाणियों का स्वामी, ज्ञान को पवित्र करने वाला और वाणियों का पोषक परमात्मा हमारे ज्ञान को पवित्र कर दे और वाणी को माधुर्य से भर दे।

पद्यानुवाद

सुखदायक प्रेरक हे प्रभुवर, यज्ञ-प्रेरणा आप हमें दो।
प्रेरित यज्ञपति को कर दो, ऐश्वर्य प्राप्त कर उसका हित हो॥
दिव्य गुणों, वाणी के स्वामी, वाणी मेरी रस से भर दो।
पवित्र ज्ञान, वाणी के पोषक, ज्ञान हमारा पावन कर दो॥

(56)

यज्ञ से विविध लाभ

इमं नो देव सवितर्यज्ञं प्रणय देवाव्यः-
सखिविदः सत्राजितं धनजितंस्वर्जितम्।
ऋचा स्तोमःसमर्धय गायत्रेण
रथन्तरं बृहद् गायत्रवर्त्तनि स्वाहा॥

—यजु० ११।८

अन्वयसहित सरलार्थ

(देव सवितः) हे संसार के उत्पन्न करने वाले शुभ प्रेरक परमात्मन्! **(त्वं नः इमं देवाव्यं सखिविदं सत्राजितं धनजितं स्वर्जितं च ऋचा स्तोमं यज्ञं स्वाहा प्रणय)** इस श्रेष्ठ गुणों और विद्वानों के रक्षक, मित्र-प्राप्ति में सहायक, सत्य को विजय दिलाने-वाले, धन प्राप्त कराने वाले और सुख बढ़ानेवाले स्तुति-समूहवाले यज्ञ को ऋग्वेद द्वारा हमें उत्तम रीति से प्राप्त कराइए। **(गायत्रेण बृहद् गायत्रवर्त्तनि स्वाहा रथन्तरम् समर्धय)** और गायत्री आदि छन्दों से विशाल गायत्री आदि छन्दों के मार्ग से ही उत्तम क्रियाओं द्वारा रमणीय यान-सदृश साधनों से हमारी उन्नति कीजिए।

पद्यानुवाद

शुभ प्रेरक ईश्वर सविता, वेद ऋचा से गुण प्राप्त कराइये।
श्रेष्ठ गुणों, मित्रों के रक्षक, आप धर्म से हमें मिलाइये॥
धन अनुपम के हों हम भागी, सदा सत्य को विजय दिलाइये।
सामर्थ्य दीजिए साधन देकर, गायत्री से सन्मार्ग सुझाइये॥

(57)

अग्नि की वृद्धि

अभ्रिरसि नार्यसि त्वया वयमग्निं शकेम खनितुं सधस्थ आ। जागतेन छन्दसाङ्गिरस्वत्॥

—यजु० ११।१०

अन्वयसहित सरलार्थ

हे सूर्यदेव आप (**अभ्रिः असि**) जलों में वेग देकर खोदने के साधन हैं, (**नारी असि**) नारी के समान गृहकार्यों को उज्ज्वल बनाने के साधन हैं। (**त्वया सधस्थे वयम् अग्निं खनितुं शकेम**) आपके ही सहयोग से हम अग्नि को प्राप्त करने में समर्थ होते हैं। (**जागतेन छन्दसा अङ्गिरस्वद्**) जगती छन्द में बताए साधनों से हम आप द्वारा अग्नि को प्राप्त करें!

पद्यानुवाद

हे परमात्मन्, ज्ञान हमें दो, अग्नि-जल तव खनन के साधन।
गृहकाय में कुशल नारी-सम, परम उज्ज्वलता के तुम कारण॥
मिले सहयोग तुम्हारा प्रभुवर, अग्नि जल के पुष्ट हों साधन।
भवसागर तर जायें भगवन्, करते हम हैं तव आराधन॥

(58)

अग्नि की शक्ति से पृथिवी की सम्पन्नता

हस्तऽआधाय सविता
बिभ्रदभ्रिꣳहिरण्ययीम्।
अग्नेर्ज्योतिर्निचाय्य पृथिव्याऽअध्या-
भरदानुष्टुभेन छन्दसाङ्गिरस्वत्॥

—यजु० ११।११

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सविता**) सूर्यदेव (**हस्ते हिरण्ययीम् अभ्रिम् आधाय बिभ्रद्**) अपने अधिकार में सुवर्ण सदृश किरण समूहरूपी खोदने के साधन को धारण करता हुआ (**अग्नेः ज्योतिः निचाय्य**) अग्नि से ज्योति प्रकट कर (**आनुष्टुभेन छन्दसा अङ्गिरस्वत् पृथिव्या अध्याभरत्**) अनुष्टुप् छन्द में बताई विधि से पृथिवी को अग्नि से परिपूर्ण कर देता है।

पद्यानुवाद

सूर्यदेव प्रकट करता है, असम शक्ति अग्निदेव की।
किरण-समूह खनन का साधन, जिनसे तोड़े शिलाखण्ड भी॥
अग्नि से प्रकटकर ज्योति, पृथिवी को इससे है भरता।
अनुष्टुप छन्द की विधि है न्यारी, भूतल के कष्ट उसी से हरता॥

(59)

भूमि से अन्न प्राप्ति की विधि

देवस्त्वा सवितोद्वपतु सुपाणिः
स्वङ्गुरिः सुबाहुरुत शक्त्या।
अव्यथमाना पृथिव्यामाशा दिश आपृण॥

—यजु० ११।६३

अन्वयसहित सरलार्थ

(सुबाहुः सुपाणिः स्वङ्गुरिः सविता देवः) किरणरूपी सुन्दर भुजाओं, हाथों और उँगलियों वाला सूर्यदेव **(शक्त्या उत त्वा उद्वपतु)** अपनी शक्ति से तुझ पृथिवी को अन्नादि से बढ़ाए! **(अव्यथमाना पृथिव्यां आशा दिश आ पृण)** और हे मानव, पृथिवी पर तू दिशाओं और उपदिशाओं को कष्ट न देता हुआ सभी प्राणियों को पुष्ट कर।

पद्यानुवाद

देव सूर्य तव कृपा अनन्त है, भूमि को अन्नादि से सजाओ।
भुजा, हस्त अरु उँगलि-सम किरणों से भूतल को तुम सरस बना दो॥
हे मानव, तुझ पर कृपा प्रभु की, पृथिवी को तुम पुष्ट बनाओ।
दिशाओं को तुम कष्ट न देना, सभी ओर के कष्ट मिटाओ॥

(60)

द्विपद् चतुष्पद् प्राणियों का कल्याणकर्ता—परमेश्वर

विश्वा रूपाणि प्रतिमुञ्चते कविः
प्रासावीद् भद्रं द्विपदे चतुष्पदे।
वि नाकमख्यत्सविता वरेण्योऽनु
प्रयाणमुषसो विराजति॥

—यजु० १२।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(**वरेण्यः कविः सविता**) सबसे स्रेष्ठ जगत्कर्ता विशाल बुद्धि वाला परमात्मा (**विश्वा रूपाणि मुञ्चते**) संसार की सभी आकृतियों की रचना करता है। वही (**द्विपदे चतुष्पदे**) दो पैरों वाले मनुष्यादि तथा चार पाँवों वाले गौ आदि पशुओं को भी जन्म देता है। वही (**कामं वि अख्यत्**) हमारी कामनाओं को पूर्ण करता तथा (**उषसः प्रयाणम् अनु विराजति**) और उषाकाल की गति के साथ सर्वत्र शोभा का विस्तार कर देता है।

पद्यानुवाद

क्रान्तप्रज्ञ वह सविता ही है, करता आकृतियों की रचना।
उसी से ही यह जगत् बना है, द्विपद चतुष्पद से जो है सजा॥
वही कामना पूरी करता सभी प्राणियों की जगदीश्वर।
उषा-काल में वही दिखाता शोभा अपनी परमेश्वर॥

(61)

श्रेष्ठ बुद्धि की कामना

ताथ्ँसवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाहं
वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्।
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनाथ्ँ
सहस्रधारां पयसा महीं गाम् ॥

—यजु० १७।७४

अन्वयसहित सरलार्थ

(वरेण्यस्य सवितुः) सबसे श्रेष्ठ प्रेरक परमात्मा की **(तां चित्रां विश्वजन्याम् सुमतिम् अहं वृणे)** उस अद्भुत संसार के लिए वरणीय (कल्याणकारी) सद्बुद्धि का मैं वरण कर रहा हूँ। **(अस्य यां प्रपीनां सहस्रधारां महीं गाम् कण्वः अदुहत्)** इस परमेश्वर की जिस अति पुष्ट हजारों वाणियों को प्रकट करने वाली महत्त्वपूर्ण वाणी को बुद्धिमान् व्यक्ति दोहता है, अर्थात् उससे सार ग्रहण करता है। (भाव यह है कि वेदवाणी ही सब वाणियों का मूल है और बुद्धिमान् इसी से तत्त्वों की खोज करते हैं।)

पद्यानुवाद

सबसे श्रेष्ठ सविता की मैं उस बुद्धि को चाहूँ मन से।
जो विचित्र है, जग हितकारी, सुखदात्री है जो जीवन में॥
जिसका दोहन कर बुद्धिमान् जन सभी सुखों को पाता है।

जो है अति पुष्टि का कारण जग जिसको अपनाता है॥
सहस्त्र वाणियों की स्त्रोत जो बुद्धि निज महत्त्व बतलाती है।
उसी बुद्धि का वरण करूँ मैं, सत्पथ पर जो ले जाती है॥

(62)

परमात्मा से पवित्रता की कामना

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च।
मां पुनीहि विश्वतः॥

—यजु० १९।४३

अन्वयसहित सरलार्थ

(देव सवितः) हे शुभ प्रेरक परमात्मन् **(पवित्रेण सवेन च)** पवित्र व्यवहार और उत्तम ऐश्वर्य से **(मां विश्वतः पुनीहि)** मुझे सभी ओर से पवित्र कर दीजिए।

पद्यानुवाद

जग के स्त्रष्टा, हे जगदीश्वर, ऐश्वर्यों के हो तुम स्वामी प्रखर।
मुझे दीजिए पावन धन वह, सुखप्रद जो हो हे परमेश्वर॥
व्यवहार भी मेरा पावन कर दो, सबका प्रिय बन जाऊँ मैं।
बुरी भावना तज कर मन से, सद्भाव सभी अपनाऊँ मैं॥

(63)

वस्त्र-निर्माण-विधि

सीसे॑न॒ तन्त्रं॒ मन॑सा मनी॒षिण॑ऽ-
ऊर्णासू॒त्रेण॑ क॒वयो॑ वयन्ति।
अ॒श्विना॑ य॒ज्ञꣳस॑वि॒ता सर॑स्व॒तीन्द्र॑स्य
रू॒पं वरु॑णो भिष॒ज्यन् ॥

—यजु० १९।८०

अन्वयसहित सरलार्थ

(मनीषिणः कवयः मनसा ऊर्णासूत्रेण तन्त्रं वयन्ति) जैसे विचारशील बुद्धिमान् लोग मन को स्थिर कर ऊन के तन्तुओं से वस्त्र रचना-करते हैं, **(अश्विना यज्ञं वयतः)** अध्यापक और उपदेशक शिक्षा-यज्ञ का विस्तार जैसे करते हैं, **(सविता सरस्वती इन्द्रस्य रूपं वयतः)** घर का सञ्चालक पति और विदुषी पत्नी ऐश्वर्य के रूप का जैसे विस्तार करते हैं तथा **(वरुणः भिषज्यन्)** वरणीय वैद्य जैसे चिकित्सा करता हुआ श्रेष्ठ कार्य करता है, उसी प्रकार हम भी उत्तम कर्म किया करें।

पद्यानुवाद

जैसे बुद्धिमान मनुज ही, ऊन से वस्त्र को बुनते हैं।
जैसे अध्यापक अरु उपदेशक, ज्ञान की वृद्धि करते हैं॥
जैसे पति अरु पत्नी भी घर में विभव बढ़ाते हैं।
जैसे वैद्य चिकित्सा कर रोगों को दूर भगाते हैं॥
वैसे ही कर्म करें हम उत्तम, राष्ट्र को सुखद बनाएँ हम।
औरों को सुख हम पहुँचावें, जिससे सब सुख पाएँ हम॥

(64)

शरीरांगों का रचयिता—परमात्मा

इन्द्रः सुत्रामा हृदयेन सत्यं
पुरोडाशेन सविता जजान।
यकृत् क्लोमानं वरुणो भिषज्यन्
मतस्ने वायव्यैर्न मिनाति पित्तम् ॥

—यजु० १९।८५

अन्वयसहित सरलार्थ

(सुत्रामा इन्द्रः सविता भिषज्यन् हृदयेन सत्यं जजान) अच्छी प्रकार से रोग से बचाने वाला आयुर्वेद के ऐश्वर्य से सम्पन्न और उत्तम प्रेरक वैद्य चिकित्सा करता हुआ अपने हृदय से रोग की चिकित्सा के सत्यस्वरूप को जान लेता है। **(पुरोडाशेन वायव्यैः)** उत्तम प्रकार से तैयार किए गए अन्न द्वारा तथा प्राणादि की उत्तम क्रियाओं द्वारा वह **(यकृत्, क्लोमानम्, मतस्ने, पित्तम् न मिनाति)** जिगर, क्लोम, हृदय के दोनों ओर की हड्डियों को तथा पित्ताशय को नष्ट नहीं करता, प्रत्युत सुखदायक चिकित्सा करता है, इसी प्रकार सविता देव हमारे कष्टों को नष्ट कर देते हैं।

पद्यानुवाद

ज्ञानवान् ही वैद्य चिकित्सा से रोग की करता पहचान।
हृदयरोग को समझ वह लेता, अन्य भी रोगों का पाता ज्ञान॥
खाद्य वस्तुओं औषधादिक से, रोगों को वह दूर भगाता।
उसी भाँति सवितादेव भी कष्ट हमारे सभी मिटाता॥

(65)

आयु की रक्षा की कामना

तेजोऽसि शुक्रममृतमायुष्पाऽआयुर्मे पाहि।
देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्वि-
नोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यामाददे॥

—यजु० २२।१

अन्वयसहित सरलार्थ

हे सविता देव, आप (**तेजः असि**) तेज के भण्डार हैं, (**शुक्रः अमृतम् आयुष्पा असि**) शुद्ध स्वरूप वाले हैं और आयु से आप अमर हैं, अर्थात् अविनाशी हैं। कृपया (**मे आयुः पाहि**) मेरी आयु की रक्षा कीजिए। मैं (**देवस्य सवितुः प्रसवे त्वा**) दिव्य गुणों के स्वामी आपसे उत्पन्न किए गए संसार में आपको (**अश्विनोः बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् आददे**) सूर्य और चन्द्रमा की भुजाओं सदृश किरणों में अनुभव कर रहा हूँ और पुष्टिकारक वायु की गतिरूप हाथों में भी अनुभव करता हूँ।

पद्यानुवाद

हे सविता, तेज के स्वामी, शुद्ध स्वरूप आपका केवल।
अविनाशी हे जगन्नियन्ता, आप ही सब जग के हैं सम्बल॥
आयु के भी रक्षक आप हैं, आयु हमारी रक्षित कर दो।
रोग-शोक से रहित रहें हम, जीवन में वह शक्ति भर दो॥
जैसे सूर्य की किरणों से हम अरु वायु से प्राण हैं लेते।
उसी भाँति तुमको हे प्रभुवर हम स्वीकार हृदय में करते॥

(66)

रक्षा तथा वृद्धि का साधन—सूर्य

हिरण्यपाणिमूतये सवितारमुप ह्वये।
स चेत्ता देवता पदम्॥

—यजु० २२।१०

अन्वयसहित सरलार्थ

(ऊतये हिरण्यपाणिं सवितारम् उपह्वये) अपनी रक्षा और वृद्धि के लिए मैं आकर्षक व्यवहार वाले जगदुत्पादक ऐश्वर्यशाली परमात्मा की उपासना कर रहा हूँ, क्योंकि **(स चेत्ता देवता पदम्)** वही ज्ञान का देने वाला तथा सबसे प्राप्त करने योग्य दिव्य गुणों का स्वामी है।

पद्यानुवाद

आकर्षक ही व्यवहार है जिसका, उस सविता को ही मन में पुकारूँ।
वह रक्षक है, उन्नतिकर्ता, स्तुति कर के मैं उसे बुलाऊँ॥
ज्ञान का दाता सब से उत्तम मोक्ष-मार्ग वह दिखलाता।
जग-बन्धन से हमें छुड़ा कर, मोक्षानन्द का वह है दाता॥

(67)

सद्‌बुद्धि का दाता—सविता

दे॒वस्य॒ चेत॑तो म॒हीं प्र स॑वि॒तुर्ह॑वामहे।
सु॒म॒तिः स॒त्यरा॑धसम् ॥

—यजु० २२।११

अन्वयसहित सरलार्थ

(**चेततः सवितुः देवस्य**) हम लोग ज्ञान के दाता और विश्वविधाता तथा सब वस्तुओं के दाता ईश्वर से (**महीं सत्यराधसम् सुमतिं प्र हवामहे**) ऐसी सद्‌बुद्धि को प्राप्त करने के लिए प्रार्थना कर रहे हैं, जो पूजनीय तथा सत्य की पोषक है।

पद्यानुवाद

चाह रहे प्रभु से वह बुद्धि पूजनीय जो सत्यमयी है।
जिस बुद्धि की तुलना में तो जग की कोई वस्तु नहीं है॥
ज्ञान-स्वरूप, ज्ञान का दाता विश्वविधाता कृपा करे।
कल्याणमयी सब सुखों की दात्री बुद्धि हम में वह भर दे॥

(68)

प्रभु से उत्तम दान की कामना

सुष्टुतिꣳसुमतीवृधो रातिꣳसवितुरीमहे ।
प्र देवाय मतीविदे॥

—यजु० २२।१२

अन्वयसहित सरलार्थ

(सुमतीवृधः सवितुः) सद्बुद्धि को बढ़ाने वाले और सबके प्रेरक परमात्मा से हम **(मतिविदे देवाय सुष्टुतिं रातिं प्र ईमहे)** बुद्धियों के ज्ञाता दिव्य गुणों के स्वामी के लिए उत्तम स्तुति से सम्पन्न दानक्रिया की कामना करते हैं।

पद्यानुवाद

सद्बुद्धि को जो सदा बढ़ाता, जग का स्रष्टा बुद्धि-प्रदाता।
दान की शक्ति हमको दे दे, कहलाएँ हम उत्तम दाता॥
स्तुतियोग्य वह दान हमारा, हमें यशस्वी कर दे ऐसा।
बड़ी कठिनता से जो मिलता, यश नहीं है होता जैसा॥

(69)

दिव्यगुणों की प्राप्ति के लिए प्रभु की उपासना

रातिꣳसत्पतिं महे सवितारमुप ह्वये।
आसवं देववीतये॥

—यजु० २२।१३

अन्वयसहित सरलार्थ

(महे देववीतये) प्रशंसनीय दिव्यगुणों की प्राप्ति के लिए हम **(रातिं, सत्पतिम् आसवं सवितारम् उपह्वये)** दानशील, श्रेष्ठजनों के पालक और सब ओर से प्रेरक संसार के उत्पादक परमात्मा को पुकार रहे हैं, अर्थात् उसकी उपासना कर रहे हैं।

पद्यानुवाद

माननीय जो उत्तम गुण हैं, उनकी प्राप्ति हमें हो जाए।
प्राप्त करके श्रेष्ठ गुणों को, जीवन यह पवित्र कहलाए॥
उन्हीं गुणों की प्राप्ति के हेतु, सविता को हम सदा पुकारें।
श्रेष्ठ स्वामी उस प्रभुवर से ही, उत्तम गुण हम पा लें सारे॥

(70)

सब गुणों से पूर्ण ऐश्वर्य की कामना

देवस्य सवितुर्मतिमासवं विश्वदेव्यम्।
धिया भगं मनामहे॥

—यजु० २२।१४

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सवितुः देवस्य**) संसार के उत्पादक सविता देव के (**आसवं विश्वदेव्यम् भगं धिया मनामहे**) ऐश्वर्य प्रदान करने वाले और सब देवों अथवा सद्गुणों के लिए हम हितकारी ऐश्वर्य को अपनी बुद्धि द्वारा उस से माँग रहे हैं।

पद्यानुवाद

दिव्य गुणों को जो उपजाती, ऐश्वर्यों को भी देने वाली।
इच्छा करते उस बुद्धि की हम, जो सौभाग्य बढ़ाने वाली॥
दिव्य गुणों का स्वामी सविता, जग का स्रष्टा वह बुद्धि हमें दे।
सद्गुण के आगार बनें हम, कल्याण सर्वदा हो उस बुद्धि से॥

(71)

देवयान से मृत्यु पर विजय

न वाऽउऽएतन्म्रियसे न रिष्यसि
देवाँ२॥ऽइदेषि पथिभिः सुगेभिः।
यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र
त्वा देवः सविता दधातु॥

—यजु० २३।१६

अन्वयसहित सरलार्थ

हे शुभकर्म करने वाले मानव (**न वा उ एतत् म्रियसे**) यह निश्चित है कि तू इस प्रकार न तो मरेगा (**न रिष्यसि**) और नाहीं क्षीण होगा, प्रत्युत (**यत्रासते सुकृतो यत्र ते ययुस्तत्र देवः सविता दधातु**) देवयान से बढ़ता हुआ तू वहीं देवों से ही जा मिलेगा, जहाँ शुभकर्म करने वाले विद्वान् गए हैं। सबका उत्पादक सविता देव तुम्हें उस स्थान पर पहुँचा दे!

पद्यानुवाद

देवों के पथ को अपनाओ, इससे मृत्यु टल जाएगी।
क्षीण न होगी देह वृथा ही, इस से मुक्ति मिल जाएगी॥
हे मानव, यदि मुक्त जनों में पाना चाहते हो तुम स्थान।
सविता देव पहुँचायेंगे तुमको देवमार्ग से कर कल्याण॥

(72)

धनों का विभाजक—सविता

विभक्तारं॑ हवामहे वसो॑श्चित्रस्य राध॑सः।
सवितारं॑ नृचक्ष॑सम्॥

—यजु० ३०।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(चित्रस्य राधसः वसोः विभक्तारं नृचक्षसम् सवितारं हवामहे) हम लोग अद्भुत तथा कामनाओं को सिद्ध करने वाले, धन का विभाजन करने वाले और सभी मनुष्यों को देखने वाले सविता (ऐश्वर्यशाली) देव को पुकार रहे हैं।

पद्यानुवाद

प्रत्येक मनुज को देख रहा जो, सब कर्मों का है जो द्रष्टा।
विविध धनों को बाँट रहा वह न्यायाधीश है सभी विश्व का॥
ऐश्वर्य के दाता उस ही प्रभु का हम आवाहन हैं करते।
कृपा करे वह जग का स्वामी ऐश्वर्यों से हमको भर दे॥

(73)

प्रातःकाल जागने के लाभ

यद्द्य सूरऽउदितेऽनागा मित्रोऽअर्यमा।
सुवाति सविता भगः ॥

—यजु० ३३।२०

अन्वयसहित सरलार्थ

हे श्रेष्ठजन **(अद्य सूरे उदिते)** आज सूर्य के उदय होने पर **(यत् अनागाः मित्रः, अर्यमा, भगः सविता सुवाति, तत्कुरुत)** जो निष्पाप मित्रजन, शासक तथा ऐश्वर्यशाली प्रेरक परमात्मा प्रेरणा दे, वही कर्म तुम करो।

पद्यानुवाद

उदय सूर्य जब हो जाता है, ऐश्वर्य बाँटता फिरता सविता।
शुद्ध पवन दे प्राणप्रदायक, जीवन में नव उत्साह है भरता॥
सूर्य-रश्मियाँ ज्योति फैलातीं, मित्र नियन्ता बनकर ईश्वर।
इसी समय हम करें साधना, मिले हमें सुख से जगदीश्वर॥

(74)

परमात्मा की स्तुति—एक कर्त्तव्य

आ नऽइडाभिर्विदथे सुशस्ति
विश्वानरः सविता देवऽएतु।
अपि यथा युवानो मत्सथा नो
विश्वं जगदभिपित्वे मनीषा॥

—यजु० ३३।३४

अन्वयसहित सरलार्थ

(नः इडाभिः) हमारी स्तुतियों को सुनकर **(विदथे)** ज्ञान की चर्चा में **(विश्वानरः)** सब जनों का हितकारी **(सविता देवः सुशस्ति एतु)** सबको प्रेरणा देने वाला विद्वान् (अथवा परमात्मा) हमें प्रभु स्तुतियों द्वारा प्राप्त हो जाए अथवा उसकी अनुभूति हमें हो **(हे युवानः अभिपित्वे यथा सत्सथ)** हे युवक विद्वानो, तुम सब भी आगमनकाल में जैसी स्थिति में हो, उसी रूप में भक्तों **(विश्वं जगत् नः मनीषा आ एतु)** और सम्पूर्ण विश्व को अपनी बुद्धि (ज्ञान) प्राप्त कराओ।

पद्यानुवाद

ज्ञान की चर्चा में सुन स्तुतियाँ, श्रेष्ठ वह सविता मिल जाता।
सब जनहितकारी प्रभु हमारी, स्तुतियाँ सुन हमको अपनाता॥
हे युवको, तुम ज्ञान की चर्चा में बुद्धि-प्राप्ति हित शीघ्र पधारो।
सविता की स्तुति से सुख पाओ, उसकी स्तुति के गीत उचारो॥

(75)

सूर्यरश्मियों द्वारा जीव का परलोक-गमन

सविता ते शरीरेभ्यः पृथिव्यां लोकमिच्छतु।
तस्मै युज्यन्तामुस्रियाः॥

—यजु० ३५।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(ते शरीरेभ्यः सविता पृथिव्यां लोकमिच्छतु) हे शरीर त्यागने वाले जीवात्मन्, सूर्यदेव (अथवा परमात्मा) तेरे नये शरीरों के लिए पृथिवी पर स्थान निश्चित करे ! **(उस्रियाः युज्यन्ताम्)** उस स्थान तक पहुँचाने के लिए सूर्य किरणें कार्य करें !

पद्यानुवाद

हे जीवात्मन्, देह त्याग कर तुम पृथिवी से हो पृथक् हुए।
नये जन्म के हेतु सविता स्थान का निश्चय स्वयं करें॥
वहीं सूर्य की किरणें तुमको अपने साथ ले जायेंगी।
उसी भूमि के तल पर तुमको नया देह दिलवाएँगी॥

(76)

देहत्याग के बाद जीवात्मा का गमन

वायुः पुनातु सविता पुनात्वग्नेर्भ्राजसा
सूर्यस्य वर्चसा। वि मुच्यन्तामुस्त्रियाः॥

—यजु० ३५।३

अन्वयसहित सरलार्थ

(अग्नेः भ्राजसा सूर्यस्य वर्चसा वायुः पुनातु सविता पुनातु) हे जीवात्मन्, अग्नि के ताप से और सूर्य के तेज से तुम्हें किरणें पवित्र कर दें और **(उस्त्रियाः विमुच्यन्ताम्)** सूर्यकिरणें तुम्हें उपयुक्त स्थान पर छोड़ दें।

पद्यानुवाद

हे जीवात्मन्, देह-त्याग पर जब किरणें ले जाएँगी।
अग्निदेव की ज्योति से वे ही तुमको पावन कर पाएँगी॥
सूर्यदेव का तेज भी तुमको पावन और पवित्र करेगा।
किरणें छोड़ेंगी जब ही तुमको, तभी नवीन शरीर बनेगा॥

(77)

शरीरोत्पत्ति के लिए गर्भाधान

सविता ते शरीराणि मातुरुपस्थऽआ वपतु।
तस्मै पृथिवि शं भव॥

—यजु० ३५।५

अन्वयसहित सरलार्थ

हे जीवात्मन्, **(सविता ते शरीराणि मातुः उपस्थे आ वपतु)** सबका प्रेरक परमात्मा तेरे शरीरों को माता के गर्भाशय में स्थापित कर दे। **(हे पृथिवि तस्मै शं भव)** हे भूमि, तुम उसका कल्याण ही करना।

दूसरा अर्थ—हे जीवात्मन्, **(सविता ते शरीराणि मातुः उपस्थे आ वपतु)** जन्म देनेवाला तुम्हारा पिता तुम्हारे शरीरों को गर्भाशय में स्थिर कर दे। **(हे पृथिवि तस्मै शं भव)** हे पृथिवी के समान उत्पन्न करने वाली माता उस गर्भ का कल्याण करना।

पद्यानुवाद

हे जीवात्मन्, प्रेरक ईश्वर प्रेरित करेगा तव आत्मा जब।
उससे तव मातृगर्भ में रखकर तुम्हें नव काया दे देगा तब॥
भूमि कल्याण तुम्हारा कर दे, गर्भ में बढ़ते ही जाना।
नव शरीर को पा करके फिर, नये विश्व में तुम आना॥
पिता तुम्हारा तुमको माँ के गर्भ में स्थापित कर देगा।
कल्याण करे यह भूमि तुम्हारा, उसी से जन्म तुम्हारा होगा॥

(78)

सूर्य, चंद्रमा, वायु का शरीर-रचना में सहयोग

देवस्य॑ त्वा सवि॒तुः प्र॑स॒वे॑ऽश्विनो॑र्बा॒हुभ्यां॑

पू॒ष्णो हस्ता॑भ्याम्। आ द॑दे॒ नारि॑रसि॥

—यजु० ३७।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(नारिरसि) हे नेतृत्व-गुण से सम्पन्न मानव, क्योंकि तुम नेता हो, अतः **(सवितुः देवस्य प्रसवे)** गुणों वाले सविता देव के द्वारा उत्पन्न इस संसार में **(अश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम् आददे)** अध्यापक और उपदेशक की शिक्षारूपी भुजाओं से तथा पुष्ट करने वाले शासक के साधनरूपी हाथों से मैं तुम्हें स्वीकार करता हूँ।

पद्यानुवाद

हे नेता, नेतृत्व गुणों से क्योंकि तुम सम्पन्न बने हो।
जग के स्त्रष्टा परमदेव के अनुशासन में तुम सदा रहो॥
सूर्यचन्द्र की भुजा-सदृश किरणों-सम तेजस्वी बनो।
वायुदेव से बल को पाकर शक्तिपूर्ण निज देह करो॥

(79)

सूर्य, चन्द्रमा, वायु से शक्ति की कामना

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां
पूष्णो हस्ताभ्याम्। आ ददेऽदित्यै रास्नासि॥

—यजु० ३८।१

अन्वयसहित सरलार्थ

हे सुशिक्षित नारी तुम (**रास्नासि**) दानशील और उदार हो। (**त्वा देवस्य सवितुः प्रसवे**) तुम्हें देव सविता द्वारा उत्पन्न किए संसार में मैं (**अश्विनोर्बाहुभ्यां**) सूर्य और चन्द्रमा की शक्तियों से सम्पन्न अपनी भुजाओं से और (**पूष्णो हस्ताभ्याम्**) वायुसदृश शक्तिशाली हाथों से स्वीकार करता हूँ।

पद्यानुवाद

परम सुशिक्षित हे देवी, दानी और उदार भी तुम।
सूर्य-चन्द्र की किरणों से लेना देह में शक्ति को तुम॥
वायु में जो अद्भुत बल है, उससे बल ले बलवती बनना।
निज गृहस्थ के सब कार्यों को, निज कौशल से प्रतिदिन करना॥

(80)

पवित्रकर्ता—सविता

वसोः पवित्रमसि शतधारं
वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्।
देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः
पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः॥

—यजु० १।३

अन्वयसहित सरलार्थ

हे सविता देव! आप (**वसोः पवित्रम् असि शतधारम्**) हमारे रहन-सहन को अपनी अनेक प्रकार की वाणियों से पवित्र करने वाले हैं, (**वसोः पवित्रमसि सहस्त्रधारम्**) आप हजारों प्रकार की वेद वाणियों से हमारे रहन-सहन को पवित्र करते हैं। हे मानव (**सुप्वा कामधुक्षः देवः सविता**) उत्तम प्रकार से पवित्र करने वाला और कामनाओं का पूरक दिव्यगुणों वाला सर्वोत्पादक परमात्मा (**शतधारेण त्वा पुनातु**) अपनी अनेक प्रकार की वेदवाणियों से तुम्हें पवित्र कर दे!

विशेष—'धारा' वाङ्नाम तथा 'शत' और 'सहस्त्र' बहुनाम। मूल के अनुसार इसका देवता 'सविता' है।

पद्यानुवाद

सर्वव्यापक देव हे सविता प्रतिपल हमको पावन करना।
कामनाएँ पूर्ण करो सब, दिव्य गुण सब हममें भरना॥
हे पवित्र वाणी के स्वामी, विविध विधि से पावन कर दो।
विविध ज्ञान के हो सागर तुम, नवल पुनीत प्रेरणा भर दो॥

(81)

सविता द्वारा उत्पन्न संसार में ग्रहण करने की विधि

देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽ-
श्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।
अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नी-
षोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि॥

—यजु० १।१०

अन्वयसहित सरलार्थ

(सवितुः देवस्य प्रसवे) संसार को उत्पन्न करने तथा प्रेरणा देने वाले परमात्मा के द्वारा उत्पन्न किए हुए इस संसार में **(अश्विनोः बाहुभ्याम्)** सूर्य और चन्द्रमा की भुजाओं सदृश बल तथा तेज से और **(पूष्णः हस्ताभ्याम्)** वायु के हाथरूप प्राण और अपान से **(अग्नये जुष्टं त्वा गृह्णामि)** अग्नि-विद्या से प्रेम करने वाले तुम्हें, मैं, आचार्य ज्ञान के हेतु स्वीकार करता हूँ।

पद्यानुवाद

सूर्य-चन्द्र से तेज को पायें, बल भी उनसे धारण कर लें।
वायु से हम निज जीवन में प्राण-अपान की शक्ति भर लें॥
सविता-देव की रचना में हम, प्रेम-प्रीति से सदा रहें।
प्रभुवर की आज्ञा का पालन, दृढ़ता से हम सदा करें॥

(82)

पवन और अग्नि द्वारा यज्ञ का विस्तार

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव
उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः।
देवीरापोऽअग्रेगुवोऽअग्रेपुवोऽग्रऽइममद्य यज्ञं
नयताग्रे यज्ञपतिः सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवम्॥

—यजु० १।१२

अन्वयसहित सरलार्थ

(**वैष्णव्यौ**) हे व्यापक होने वाले वायु तथा अग्नि, तुम दोनों (**सवितुः पवित्रे प्रसवे स्थः**) संसार के उत्पादक परमात्मा से उत्पन्न किए गए संसार में विद्यमान हो। मैं यज्ञ द्वारा तुम्हें (**अच्छिद्रेण पवित्रेण**) दोषरहित पवित्र यज्ञकर्म द्वारा (**सूर्यस्य रश्मिभिः**) सूर्य की किरणों की सहायता से (**उत्पुनामि**) अधिक पवित्र कर रहा हूँ। (**हे देवीः आपः**) हे आकाश में विद्यमान जलो, (**अग्रेगुवः अग्रेपुवः**) तुम आगे बढ़कर पवित्र करने वाले बनो और (**यज्ञपतिं सुधातुं यज्ञपतिं देवयुवं इमं यज्ञमग्रे नयत**) यज्ञपति को शुभकर्म में स्थिर रखने के लिए तथा देवों को पुष्ट करने के लिए इस यज्ञ को आगे बढ़ाओ।

पद्यानुवाद

यह पवित्र सुखदात्री रचना, सविता ने है जिसे रचा।
उसी में व्यापक जल अरु अग्नि करते अपना कार्य सदा॥

सूर्य-रश्मियों से बल पाकर आगे बढ़ते जाते हैं।
पावन करते सकल विश्व को, यज्ञ-तत्त्व पहुँचाते हैं॥
दिव्य जलो, यज्ञपति को बल दो, जिससे कार्य वह किया करे।
सहयोग प्राप्त कर सदा तुम्हारा यज्ञ से सृष्टि सदा भरे॥

(83)

यज्ञ से प्राण आदि की वृद्धि

धान्यमसि धिनुहि देवान् प्राणाय
त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा।
दीर्घामनु प्रसितिमायुषे धां देवो
वः सविता हिरण्यपाणिः
प्रतिगृभ्णात्वच्छिद्रेण पाणिना
चक्षुषे त्वा महीनां पयोऽसि॥

—यजु० १।२०

अन्वयसहित सरलार्थ

हे यज्ञ, तुम (**धान्यमसि**) अन्नों के लिए हितकारी हो। (**प्राणाय त्वा उदानाय त्वा व्यानाय त्वा**) तुम प्राण, उदान और व्यान की शक्तियों को बढ़ाने के लिए (**देवान् धिनुहि**) देवों को पुष्ट करो। (**आयुषे दीर्घाम् अनुप्रसितिं धाम्**) मैं आयु की वृद्धि के लिए तुम्हारी विस्तृत कार्यशैली को धारण कर रहा हूँ।

(हिरण्यपाणिः देवः सविता) आकर्षक व्यवहारों वाला सविता (सूर्य अथवा परमात्मा) **(अच्छिद्रेण पाणिना त्वा चक्षुषे प्रतिगृभ्णातु)** उत्तम व्यवहार द्वारा संसार की वस्तुओं को दिखाने के लिए तुम्हें स्वीकार करे! **(महीनां पयः असि)** हे यज्ञ, तुम महान् कर्मों को पुष्ट करने वाले हो।

पद्यानुवाद

देवयज्ञ, तुम धन्य-धन्य हो, अन्नों के हितकारी हो।
सब देवों को पुष्ट हो करते, नभ में भूतल पर भी जो॥
प्राण, उदान, व्यान भी तुमसे शक्ति पाकर आयु बढ़ाते।
सवितादेव प्राप्त कर तुमको सभी सृष्टि को सुख पहुँचाते॥
तुम्हें प्राप्त कर रवि दिखलाते, श्रेष्ठ वस्तुएँ सकल जगत् में।
शुभकर्मों के पोषक हो तुम, तुम्हें प्रेम से हम सदा करें॥

(84)

पृथिवी—ओषधियों की भूमि

पृथिवि देवयजन्योषध्यास्ते मूलं मा
हिꣳसिषं व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु
ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां
पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि
यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्॥

—यजु० १।२५

अन्वयसहित सरलार्थ

(देवयजनि पृथिवि ते ओषध्याः मूलं मा हिंसिषम्) हे देवों की यज्ञस्थली भूमि, मैं तुझ पर उगने वाली ओषधि की जड़ का नाश कभी न करूँ। **(व्रजं गोष्ठानं गच्छ)** तुम गोपालों की गोशाला में जाओ। **(द्यौः ते वर्षतु)** द्युलोक तुम्हें वर्षा से तृप्त कर दे। **(सवितः देव)** हे सबके उत्पादक दिव्यगुणों के स्वामी परमात्मन्, **(परम् अस्यां पृथिव्यां शतेन पाशैः यः अस्मान् द्वेष्टि)** परन्तु इस पृथिवी पर जो सैंकड़ों प्रकार की कुटिल चालों से हमें बाँधकर हमसे द्वेष करना चाहता है **(यं च वयं द्विष्मः तम् अतः मा मौक्)** और जिससे इसी कारण हम द्वेष करते हैं, उसे कष्टों से मुक्त मत कीजिए।

पद्यानुवाद

भूमिमाता, देवयज्ञ की केवल बस आधार तुम्हीं हो।
ओषधियाँ सब तुम पर उगतीं, नाश करें जो रोगों को॥
कभी मूल न नष्ट करें हम तव ओषधियों का माता।
वर्षा से तुमको तृप्त करे वह सविता जो है जग का त्राता॥
जो भी हमसे द्वेष करे, उसको वह बन्धन में डाले।
पराधीन जो करना चाहे, पूर्णरूप से उसको मारे॥

(85)

दुष्टों के लिए बन्धन

अपाररुं पृथिव्यै देवयजनाद्वध्यासं
व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु ते द्यौर्ब-
धान देव सवितः परमस्यां पृथिव्याꣳ
शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि यं च
वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्।

अररो दिवं मा पप्तो द्रप्सस्ते द्यां
मा स्कन् व्रजं गच्छ गोष्ठानं वर्षतु
ते द्यौर्बधान देव सवितः परमस्यां
पृथिव्याꣳ शतेन पाशैर्योऽस्मान्द्वेष्टि
यं च वयं द्विष्मस्तमतो मा मौक्॥

—यजु० १।२६

अन्वयसहित सरलार्थ

(देवयजनात् पृथिव्यै अरसम् अप वध्यासम्) देवयज्ञ के कारण पृथिवी के लिए मैं कष्टदायी दुष्टों और रोगों का नाश कर दूँ! **(देव सवितः)** संसार को उत्पन्न करने वाले हे प्रभो, **(गोष्ठानं व्रजं गच्छ)** गौओं से परिपूर्ण स्थान में अपनी शक्ति दिखाइए, उसके लिए **(ते द्यौः वर्षतु)** आपसे रचा द्युलोक वृष्टि करे। **(परम् अस्यां पृथिव्यां शतेन पाशैः यः अस्मान् द्वेष्टि यं च**

वयं द्विष्मः तं बधान) परन्तु इस पृथिवी पर जो व्यक्ति सैंकड़ों कुचालों से हमसे द्वेष करता है और इसी कारण जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे बन्धन में डाल दीजिए, (**तम् अतः मा मौक्**) उसे दण्ड से मुक्त मत कीजिए। (**अररः! दिवं मा पप्तः**) हे दुःखदायी व्यक्ति, तू कभी सुख प्राप्त मत कर। (**ते द्रप्सः द्यां मा स्कन्**) तेरी कुचालें सुख के पथ में विघ्न न बनें। हे (**सवितः देव**) संसार के नियामक प्रभो, (**गोष्ठानं व्रजं गच्छ**) गौओं के समूह में पहुँचिए। (**ते द्यौः वर्षतु**) उनके लिए आपका द्युलोक वर्षा करे। (**परम् अस्यां पृथिव्यां शतेन पाशैः यो अस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः तं बधान**) परन्तु इस पृथिवी पर जो हमसे द्वेष करता है और इसी कारण जिससे हम द्वेष करते हैं, उसे बन्धन में डाल दीजिए (**तम् अतः मा मौक्**) उसे बन्धन से मुक्त मत कीजिए।

पद्यानुवाद

हे सविता, वह शक्ति हमें दो, नष्ट करें हम दुष्टों को।
जो भी पीड़ित करते रोग या मानव पूर्ण नाश ही उनका हो॥
गोवर्धन हो देश में प्रभुवर, गोचर-भू विस्तार करें।
दीनभाव मिटे राष्ट्र से, सौख्य से इसको सदा भरें॥
पराधीन जो करना चाहे, उसे पराजित हम कर दें।
रहे स्वतन्त्र राष्ट्र यह अपना, प्रेमभाव से इसे भरें॥

(86)

जन्मों का स्वामी—सविता

सविता प्रसवानामधिपतिः स मावतु।
अस्मिन्ब्रह्मण्यस्मिन्कर्मण्यस्यां पुरोधाया-
मस्यां प्रतिष्ठायामस्यां चित्त्यामस्यामा-
कूत्यामस्यामाशिष्यस्यां देवहूत्यां स्वाहा॥

—अथर्व० ५।२४।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**अस्मिन् ब्रह्मणि**) इस वैदिक कर्म में, (**अस्मिन् कर्मणि**) इस वैवाहिक कर्म में, (**अस्यां पुरोधायाम्**) इस पुरोहित द्वारा की जानेवाली क्रिया में, (**अस्यां प्रतिष्ठायाम्**) इस सम्बन्ध की स्थापना में, (**अस्याम् आचित्त्याम्**) इस सोच-समझ से पूर्ण क्रिया में, (**अस्याम् आकुत्याम्**) इस संकल्प में और (**अस्याम् आशिषस्यां देवहूत्याम्**) इस आशीर्वादात्मक विद्वानों के निमन्त्रण में (**स्वाहा**) उत्तम क्रियाओं द्वारा (**स प्रसवानामधिपतिः सविता मा अवतु**) वह सब जन्मों का स्वामी जगदुत्पादक परमात्मा मेरी रक्षा और वृद्धि करे!

पद्यानुवाद

जीवन-दाता सविता केवल, हमें सुरक्षित सदा करे।
उत्तम कर्म करें हम प्रतिदिन, भाव हृदय में श्रेष्ठ भरे॥
वैवाहिक कर्म के अन्तर्गत शुभ विविध कर्म होते हैं जो।
सब कर्मों में रहें सुरक्षित, ईश-कृपा हम सब पर हो॥

पुरोहित का भी कर्म सुखद हो, सोच-समझ के कर्म सुखद हों।
संकल्प हमारे श्रेष्ठ सुखद हों, आशीर्वाद भी सुखद मिलें जो॥

(87)

यथाकाल जन्म देने वाला—सविता

सवितः श्रेष्ठेन रूपेणास्या नार्या गवीन्योः।
पुमांसं पुत्रमा धेहि दशमे मासि सूतवे॥

—अथर्व० ५।२५।१२

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सवितः**) हे जगदुत्पादक प्रभो, (**अस्या नार्या गवीन्योः**) इस स्त्री की गर्भधारक दोनों नाड़ियों से (**पुमांसं पुत्रम्**) शक्तिशाली पुत्र को (**दशमे मासि सूतवे अधेहि**) दसवें महीने में जन्म देने के लिए स्थिर कर दीजिए।

पद्यानुवाद

हे सविता, तुम कृपा करो अब, दोनों ओर इस नारी के।
शुभ संयम से गर्भ सुरक्षित इस देवी का बना रहे॥
दसवें मास में गर्भ प्रकट हो, इसे पुत्र वररूप मिले।
जिसे प्राप्त कर प्रेमी-जन का प्रेम से प्लावित हृदय खिले॥

(88)

यज्ञ के लिए प्रेरक—सविता

यजूंषि यज्ञे समिधः स्वाहाग्निः
प्रविद्वानिह वो युनक्तु॥

—अथर्व० ५।२६।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**प्र विद्वान् अग्निः इह यज्ञे**) श्रेष्ठ विद्वान्, सबका नायक ऋत्विज इस यज्ञ में (**वः यजूंषि समिधः स्वाहा युनक्तु**) आपके लिए यजुर्वेद के मन्त्रों और समिधाओं का उत्तम विधि से प्रयोग करे।

पद्यानुवाद

इस यज्ञ में विद्वान् आयें, अग्नि पूर्ण प्रदीप्त हो।
मन्त्र बोलें शुद्ध सारे, पुरोहित हो विद्वान् जो॥
उत्तम विधि से मन्त्र यजु के श्रद्धा-सहित बोलें सभी।
और समिधाएँ सुखद हों जो अग्नि प्रदीप्त करें सभी॥

(89)

यज्ञ में शुभक्रियाओं और शुभवचनों का प्रयोग

युनक्तु देवः सविता
प्रजानन्नस्मिन्यज्ञे महिषः स्वाहा ॥

—अथर्व० ५।२६।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(अस्मिन् यज्ञे महिषः प्रजानन् देवः सविता) इस यज्ञ में महान् सर्वज्ञ, दिव्य गुणों का भण्डार तथा सबका प्रेरक परमात्मा **(स्वाहा युनक्तु)** शुभ क्रियाओं और वचनों को प्रेरित करे।

पद्यानुवाद

उत्तम विधि से इस यज्ञ में, देव सविता भी पधारें।
ज्ञान देकर कर्म इसके सब ओर से इसको सँवारें॥
प्रेरित हमें करते रहें यज्ञ-हित वे सविता सदा।
यज्ञ से सुखप्राप्त हो, बढ़ती रहे सुख-सम्पदा॥

(90)

भूमि और आकाश का जन्मदाता—सविता

अभि त्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुम्।
अर्चामि सत्यसवं रत्नधामभि प्रियं मतिम्॥

—अथर्व० ७।१४।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(ओण्योः कविक्रतुम्) भूमि और आकाश को बुद्धिपूर्वक रचने वाले **(सत्यसवम्)** सत्य ज्ञान के दाता, **(रत्नधाम्)** सभी रमणीय पदार्थों के धारणकर्ता, **(अभिप्रियम्)** सबके प्रिय **(मतिम्)** बुद्धि के दाता **(तं सवितारं देवम्)** उस सबके प्रेरक और उत्पादक परमात्मा की मैं **(अभि अर्चामि)** पूर्णतः उपासना करता हूँ।

पद्यानुवाद

उस देव का मैं पूजन करता, आकाश का जो है स्रष्टा।
सत्य ज्ञान का जो है दाता, रमणीय पदार्थों का जो धर्ता॥
सबका प्रिय जो बुद्धि-प्रदाता, सबका प्रेरक पालक जो।
दिव्य गुणों को प्राप्त वे करते, भक्ति से जो पूजें सविता को॥

(91)

भूमि और आकाश का जन्मदाता—सविता

ऊ॒र्ध्वा यस्या॒मति॒र्भा अदि॑द्यु॒त॒त्सवी॑मनि।
हिर॑ण्यपाणिरमिमीत सु॒क्रतु॑ः कृ॒पात्स्व॑ः॥

—अथर्व० ७।१४।२

अन्वयसहित सरलार्थ

(यस्य अमतिः भाः) जिसकी असीम ज्योति **(सवीमनि ऊर्ध्वा अदिद्युतत्)** उसकी प्रेरणा से सबसे ऊपर तक प्रकाश फैला रही है, वही **(सुक्रतुः हिरण्यपाणिः)** शुभकर्मों को करने वाला आकर्षक व्यवहार से सम्पन्न **(कृपात् स्वः अमिमीत)** अपने सामर्थ्य से सब सुख प्रदान करता है।

पद्यानुवाद

निज सामर्थ्य से सभी सुखों को, देता है वह सविता हमको।
है असीम ही ज्योति उसकी, उससे ज्योतित सब ही जग हो॥
नीचे से ऊपर तक उसका, आलोक जगत् में छाया है।
शुभकर्मों का वह है कर्ता, आकर्षक उसकी माया है॥

(92)

पितरों को रत्न तथा बल का दाता—सविता

दमूना देवः सविता वरेण्यो
दधद्रत्नं दक्षं पितृभ्य आयूंषि।
पिबात्सोमं ममददेनमिष्टे परिज्मा
चित् क्रमते अस्य धर्मणि॥

—अथर्व० ७।१४।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(**दमूनाः वरेण्यः सविता देवः**) सबको अपने वश में रखने वाला सर्वश्रेष्ठ और सबका उत्पादक सविता देव (**पितृभ्यः रत्नं दक्षम् आयूंषि दधत्**) पालनकर्त्ताओं को रमणीय बल और दीर्घ आयु प्रदान करता है। (**अस्य धर्मणि सोमं पिबात्**) वे पालकजन इस द्वारा धारण किए गए परमानन्द का भी भोग करते हैं। (**एनं ममदत्**) श्रेष्ठ जनों को उत्तम वस्तुएँ देते हुए इसे प्रसन्नता प्राप्त होती है। (**परिज्मा इष्टं चित् क्रमते**) सब ओर विद्यमान वह सविता अपने भक्तों को इष्ट वस्तुओं से सम्पन्न कर देता है।

पद्यानुवाद

सबसे श्रेष्ठ देव हैं सविता, विश्व का दमन वही हैं करते।
पालक-पोषक श्रेष्ठ जनों को, रत्नों अरु आयु से भरते॥
जो उस प्रभु को है धारण करता, परमानन्द को पाता है।
भक्त जनों को जब वह देता, आनन्दमय हो जाता है।
ऊपर, नीचे, आगे, पीछे भक्तों को सुख से भर देता।
भक्तिभाव केवल वह उनसे इसके बदले में है लेता॥

(93)

वरणीय पदार्थों का दाता—सविता

सावीर्हि देव प्रथमाय पित्रे
वर्ष्माणमस्मै वरिमाणमस्मै।
अथास्मभ्यं सवितर्वार्याणि
दिवोदिव आ सुवा भूरि पश्वः॥

—अथर्व० ७।१४।३

अन्वयसहित सरलार्थ

हे (**देव सवितः**) दिव्य गुणों के आधार शुभ प्रेरक प्रभो! (**प्रथमाय अस्मै पित्रे वर्ष्माणम् परिमाणं हि सावीः**) उत्कृष्ट इस पालकजन के लिए आप सुख की वृष्टि करते और इसी के लिए सब ओर से सम्मान प्राप्त कराते हैं। (**अथ अस्मभ्यं दिवो दिव वार्याणि**) और अब हमारे लिए भी प्रतिदिन वरणीय पदार्थ तथा (**भूरि पश्व**) बहुत पशु प्रदान कीजिए।

पद्यानुवाद

शुभ प्रेरक हे जग के स्रष्टा, सवितादेव यह नियम आपका।
पालक-पोषक जो जन होते, देते उनको श्रेष्ठ सम्पदा॥
सुखों की वर्षा करते उन पर, उनका बढ़ता है सम्मान।
हम पर भी वह कृपा कीजिए, हो जिससे सबका कल्याण॥
वरणीय पदार्थ हमें भी दीजो, दीनभाव मिट जाए सारा।
उत्तम पशु भी दो हम को प्रभु, दारिद्र्य मिटा दो आप हमारा॥

(94)

विश्ववारा सुमति का दाता—सविता

तां सवितः सत्यसवां सुचित्रामाहं
वृणे सुमतिं विश्ववाराम्।
यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनां
सहस्रधारां महिषो भगाय॥

—अथर्व० ७।१५।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**सवितः**) हे सबके प्रेरक प्रभो, (**अहं तां सत्यसवां सुचित्राम् विश्ववाराम् सुमतिम् आवृणे**) मैं उस सत्य की प्रेरिका, बहुत विचित्र, सबकी रक्षा करने वाली सद्बुद्धि को अच्छी प्रकार स्वीकार करता हूँ, (**अस्य भगाय यां प्रपीनां सहस्रधाराम् महिषः कण्वः अदुहत्**) अपने ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए जिस सुपुष्ट और अनेक सम्पदाओं को जन्म देने वाली सद्बुद्धि को महान् बुद्धिमान् दूहता है, उसके तत्त्व को ग्रहण करता है, मैं उसी बुद्धि को चाहता हूँ।

पद्यानुवाद

ऐसी सुमति सविता दे दो, सत्य की जो शुभ प्रेरक हो।
विश्व प्रशंसित भी हो जो, अद्भुत गुणों से पूरित हो॥
जिस बुद्धि से बुद्धिमान् जन ऐश्वर्य सभी हैं लेते पा।
सहस्र सम्पदाएँ जिससे मिलतीं, टलती जिससे सब विपदा॥

(95)

राष्ट्र के लिए स्वास्थ्य और वृद्धि की सविता से कामना

बृहस्पते सवितर्वर्धयैनं
ज्योतयैनं महते सौभगाय।
संशितं चित्सन्तरं सं शिशाधि
विश्वमनु मदन्तु देवाः॥

—अथर्व० ७।१६।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**बृहस्पते**) हे ब्रह्माण्ड के स्वामी, (**सवितः**) ऐश्वर्य के दाता परमात्मन् (**एनं वर्धय**) आप हमारे राष्ट्र को समुन्नत कीजिए। (**एनं महते सौभगाय**) इसे महान् सौभाग्य की प्राप्ति के लिए (**ज्योतय**) ज्ञान ज्योति से सम्पन्न कर दीजिए। (**संशितं चित् संतरं शिशाधि**) इसके उत्कृष्ट विभाग को और उत्कृष्ट बना दीजिए, जिससे (**देवाः विश्वम् अनुमदन्तु**) सब विद्वान् लोग इसमें निरन्तर आनन्द से रह सकें।

पद्यानुवाद

हे ब्रह्माण्ड के स्वामी सविता, ऐश्वर्यों के दाता हो।
अपनी अद्भुत रक्षाओं से तुम, सकल जगत् के त्राता हो॥
राष्ट्र हमारा दीनहीन है, इसे बढ़ाओ, उन्नत कर दो।
सौभाग्य जगाओ इस भारत का, ऐश्वर्यों से यह पूर्ण सदा हो॥
पूर्ण श्रेष्ठ यह हो जाए, अरु ज्ञान की ज्योति से चमके।
सुखी रहें विद्वान् यहाँ पर, ज्ञान की सरिता सदा बहे॥

(96)

यजमान के लिए धन की कामना

धाता रातिः सवितेदं जुषन्तां
प्रजापतिर्निधिपतिर्नो अग्निः।
त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणो
यजमानाय द्रविणं दधातु॥

—अथर्व० ७।१७।४

अन्वयसहित सरलार्थ

(धाता रातिः सविता, प्रजापतिः, निधिपतिः, अग्निः नः इदं जुषन्ताम्) सबका धारक और पालक जगदुत्पादक सविता, प्रजाओं का स्वामी और ऐश्वर्यों का भण्डार प्रकाशस्वरूप परमात्मा हमारी इस प्रार्थना को प्रीतिपूर्वक सुने। **(त्वष्टा विष्णुः प्रजया संरराणः यजमानाय द्रविणं दधातु)** सब पदार्थों को घड़ने वाला सर्वव्यापक वह परमात्मा प्रजा के साथ आनन्द प्राप्त करता हुआ यज्ञ करने वाले को धन से सम्पन्न कर दे!

पद्यानुवाद

सबका धारणकर्ता, दाता और प्रजापति जो सविता है।
वह ही अग्नि अरु निधिपति सकल विश्व का त्राता है॥
सुने प्रार्थना आज हमारी जग का स्त्रष्टा प्रभुवर व्यापक।
यजमान को देवे द्रविण विविध वह, जो जग का है रक्षक अरु पालक॥

(97)

सविता से शुभ वस्तुओं की कामना

यन्न इन्द्रो अखनद्यदग्निर्विश्वे
देवा मरुतो यत्स्वर्काः।
तदस्मभ्यं सविता सत्यधर्मा
प्रजापतिरनुमतिर्नि यच्छात्॥

—अथर्व० ७।२४।१

शब्दार्थ—(यत् इन्द्रः, यत् अग्निः, यत् विश्वे देवाः यत् स्वर्काः मरुतः नः अखनत्) जो सूर्य, जो अग्नि, जो सभी विद्वान् तथा जो उत्तम तेजस्वी मनुष्य हमारे लिए सुखदायी वस्तुएँ प्राप्त कराते हैं, **(तत् सत्यधर्मा प्रजापतिः अनुमतिः सविता अस्मभ्यं नियच्छात्)** वे सभी पदार्थ सत्य नियमों वाला प्रजापालक और हमसे प्रेम करने वाला जगदुत्पादक परमात्मा हमें प्रदान करे!

पद्यानुवाद

सूरज, अग्नि, विद्वान् अरु विजयशील सैनिक जन जिनको।
प्राप्त कराते सुखद वस्तुएँ प्रयत्नशील जो सदा ही हों॥
ऐसी सभी वस्तुएँ हमको सविता देव प्रदान करें।
सत्य नियम के पालनकर्ता, दैन्य हमारा सदा हरे॥

(98)

सविता की ज्योति—सर्वत्र

स एति सविता स्वर्दिवस्पृष्ठेऽवचाकशत्।
रश्मिभिर्नभ आभृतं महेन्द्र एत्यावृतः॥

—अथर्व० १३।४।१

अन्वयसहित सरलार्थ

(**स स्वः सविता एति**) वह सुखदायक, सबका प्रेरक सूर्य उदय हो रहा है और (**दिवस्पृष्ठेऽवचाकशत्**) द्युलोक को सर्वत्र प्रकाशित कर रहा है। (**महेन्द्रः रश्मिभिः नभः आभृतम्**) यह महान् ऐश्वर्यशाली सूर्य अपनी किरणों से सम्पूर्ण आकाश को भर रहा है और (**आवृतः एति**) किरणों से घिरा हुआ वह हमें आता हुआ दीख रहा है।

पद्यानुवाद

उदय हो रहे सूर्यदेव हैं, सुख की वृष्टि करने वाले।
व्योम के विस्तृत भाग उन्होंने ज्योतिपूर्ण हैं कर डाले॥
अपनी किरणों से घिरे हुए आलोकित करते सारे जग को।
है प्रकाश से पूर्ण विश्व यह, मिटा दिया इसके तम को॥

(99)

उत्तम रक्षक—परमात्मा

प्र त्वा मुञ्चामि वरुणस्य पाशाद्येन
त्वाबध्नात्सविता सुशेवाः।
उरुं लोकं सुगमत्र पन्थां
कृणोमि तुभ्यं सहपत्न्यै वधु॥

—अथर्व० १४।१।५८

अन्वयसहित सरलार्थ

(वधु त्वा वरुणस्य पाशात् मुञ्चामि) हे बहु, मैं तेरा पति नियमों के उन बन्धनों से तुम्हें मुक्त करता हूँ, **(येन त्वा सुशेवः सविता अबध्नात्)** जिनसे तुम्हें तुम्हारे हितचिन्तक पिता ने बाँध रखा था। **(तुभ्यं सहपत्न्यै अत्र पन्थाम् उरुं लोकं सुगम् कृणोमि)** तुम्हारे लिए पत्नीसहित होकर मैं इस संसार के मार्ग को विस्तृत देखने योग्य और सरल बना रहा हूँ।

पद्यानुवाद

हे वधु, तुम को मुक्त कर रहा उन्हीं बन्धनों से मैं आज।
जिनसे तुमको बाँध रखा था, श्रेष्ठ पिता ने दे सुख-साज॥
तुम्हें बनाकर अपनी पत्नी, सुगम मार्ग तव करता हूँ।
गृहपत्नी तुम्हें बनाकर, बन्धन सारे हरता हूँ॥

(100)

वधू के लिए दीर्घायु की कामना

प्र बुध्यस्व सुबुधा बुध्यमाना
दीर्घायुत्वाय शतशारदाय।
गृहान्गच्छ गृहपत्नी यथासो
दीर्घं त आयुः सविता कृणोतु॥

—अथर्व० १४।२।७५

अन्वयसहित सरलार्थ

(सुबुधा बुध्यमाना) उत्तम ज्ञान से सम्पन्न हे वधू, तुम सावधान रहती हुई **(गृहान् गच्छ)** पति के गृहसदस्यों में पहुँच जाओ। **(गृहपत्नी यथा असः)** गृहस्वामिनी बन कर रहो। **(सविता ते आयुः दीर्घं कृणोतु)** सबका प्रेरक वह परमात्मा तुम्हारी आयु बढ़ा दे!

पद्यानुवाद

बुद्धिमती हो समझदार वधु, गृह में तुम प्रवेश करो।
यही तुम्हारा प्रिय घर अब है, सुख से इसमें सदा रहो॥
गृहपत्नी तुम बनी आज से, सौख्य सभी तुम प्राप्त करो।
दीर्घायु तुमको सविता कर देवें, प्रेम-प्रीति से भर दो घर को॥